04 - दक्षिण से 'मेक-अप' के फेर में बीजेपी

05 - चण्डीगढ़ से सूरत वाया खजुराहो का राजनीतिक संदेश

A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 25 अप्रैल, 2024

06- श्रीविनायकम स्कूल के यश पवार ने स्टेट मेरिट लिस्ट में प्राप्त किया दसवां स्थान

07- मुख्यमंत्री अधोसंरचना की डेढ़ करोड़ की राशि पर सवाल

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 190 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

और जब!
धरती की सारी किताबें उड़ जाएंगी
झंझावात में,
जब उन खुले अधखुले पन्नों पर,
रंग बिरंगी स्याही से रंगा,
पका अधपका चिंतन,
विलीन हो जाएगा चक्रवातों के प्रवाह में कहीं...
जब सूने कोरे पृष्ठ उड़ कर पहुंचेंगे
उस निराकार निरामय के पास
तब देगा वो आकार और लय नए विचारों को।
बनाएगा बहुत से नए रंग
गढ़ेगा शाश्वत अभिनव शब्द ब्रह्म।
इस तूफ़ान के बाद होगी चक्रवाती वर्षा
अपौरुषेय ज्ञान की बूंदें मूसलाधार बरसेंगी
सबके सिर पर.
उनके भी, जिनके मस्तिष्क कुंद हो चुके हैं
कैद हैं चंद किताबों और इक्का दुक्का विचारधाराओं में,
हम सब नहाएंगे उन उन्मुक्त बारिशों में
बिल्कुल किसी अबोध बच्चे की तरह...
इसके लिए ज़रूरी है,
ज्ञान के अहम का अहंकारी के साथ
कहीं विलुप्त हो जाना,
सारे किताबी ज्ञान का किताबों के साथ
हवा हो जाना,
विलीन हो जाना कहीं किसी अज्ञात
अंतरिक्ष में.....!

– आद्या

प्रसंगवश

मतदाता की बेरुखी लोकतंत्र के लिए नहीं है अच्छे संकेत

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

18वीं लोकसभा के लिए पहले चरण की 102 सीटों के लिए मतदान के प्रति मतदाताओं की उदासीनता ने निराश ही किया है। आजादी के साढ़े सात दशक बाद भी मतदान प्रतिशत बढ़ने के स्थान पर कम होना निश्चित रुप से किसी भी रुप में लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं माना जा सकता है। चुनाव आयोग के लाख प्रयासों के बावजूद मतदान प्रतिशत कम होना निश्चित रुप से सोचने को मजबूर कर देता है। चुनाव आयोग से पहले चरण के मतदान के प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया जाये तो साफ हो जाता है कि 2019 की तुलना में दो प्रतिशत तक मतदान प्रतिशत में गिरावट आई है। हालांकि त्रिपुरा और सिक्किम में मतदान का आंकड़ा 80 प्रतिशत को छूने में सफल रहा है पर वहां भी 2019 की तुलना में कम है। त्रिपुरा में 2019 के 81.9 प्रतिशत की तुलना में 81.5 प्रतिशत और सिक्किम में 84.8 प्रतिशत की तुलना में 80 प्रतिषत मतदान रहा है। पहले चरण के चुनावों में मतदान का सबसे कम प्रतिशत बिहार का रहा है जहां मतदान का आंकड़ा 50 प्रतिषत को भी छू नहीं पाया है। छत्तीसगढ़ में अवश्य 2019 की तुलना में एक प्रतिशत से कुछ अधिक मतदान रहा है। जहां तक राजस्थान का प्रश्न है 12 सीटों पर हुए मतदान में मतदान प्रतिशत में 6 फीसदी की गिरावट रही हैं। सभी सीटों पर मतदान का प्रतिशत 2019 की तुलना में कम रहे हैं। हालांकि चुनाव आयोग द्वारा जारी आंकड़े आरंभिक सूचना के आधार पर है पर इनमें कोई खास बदलाव आने की संभावना नहीं है। मजे की बात यह है कि पहले चरण में लोकसभा की 543 सीटों में से 20 प्रतिशत से कुछ कम 102 सीटों पर मतदान हो चुका हैं। यदि मतदाताओं का अगले चार चरणों के मतदान में भी यही रुख रहता है तो यह चुनाव आयोग, राजनीतिक दलों, लोकतांत्रिक व्यवस्था, गैरसरकारी संगठनों सहित सभी के लिए चिंतनीय हो जाता है।

मतदान में हिस्सा नहीं लेने वाले मतदाताओं को किसी भी हालत में देश का जिम्मेदार नागरिक नहीं कहा जा सकता। आज चुनाव आयोग ने जहां अवेयरनेस प्रोग्राम के माध्यम से लोगों को मतदान के प्रति जागृत किया हैं वहीं पारदर्शी और सहज मतदान व्यवस्था सुनिश्चित की है। आज मतदाताओं को किसी राजनीतिक दल पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। एक मतदान केन्द्र पर एक सीमा तक ही मतदाता होने के साथ ही मतदान केन्द्र पर सभी तरह की व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है। अब तो मतदाता को चुनाव आयोग द्वारा मतदाता क्रमांक से लेकर मतदान केन्द्र तक की जानकारी का समावेश करते हुए परची उपलब्ध कराई जाती है। सीनियर सिटिजन और मतदान केन्द्र तक जाने में अक्षम मतदाताओं को घर से मतदान की सुविधा दी गई है। मतदाताओं को जागृत करने के लिए प्रचार के सभी माध्यम यहां तक कि सोशियल मीडिया का उपयोग किया जाने लगा है। मतदान को निष्पक्ष और भयमुक्त कराने के लिए संपूर्ण व्यवस्था चाक चोबंद की जाती है। राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखी जाती है। यहां तक कि उम्मीदवार से संबंधित जानकारी साझा की जाती है। संवेदनशील मतदान केन्द्रों पर विशेष व्यवस्था होती है। कानून व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ ही मतदान केन्द्र पर सुरक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है। इसके अलावा यह नहीं भूलना चाहिए कि साक्षरता और लोगों में जागरुकता आई है। चुनाव आयोग के अलग अलग ऑब्जर्वर द्वारा पूरी व्यवस्था पर कड़ी नजर रखी जाती है ताकि राजनीतिक दलों या उम्मीदवारों द्वारा मतदाताओं को किसी भी गलत तरीके से प्रभावित नहीं किया जा सके। इस सबके बावजूद मतदान कम होना गंभीर हो जाता है।

लोकसभा के पहले चुनाव 1952 में 44.87 प्रतिशत मतदान रहा था जो सर्वाधिक 67.40 प्रतिशत 2019 के 17वीं लोकसभा के चुनाव में रहा। मतदान में उतार चढ़ाव तो देखा जाता रहा है पर चुनाव व्यवस्था के सरलीकरण, पारदर्शिता, निष्पक्ष चुनाव की चाक-चोबंद व्यवस्था, ग्रामीण और शहरी सभी क्षेत्रों में साक्षरता में बढ़ोतरी के बावजूद यदि मतदान प्रतिशत 90 के आंकड़े को भी नहीं छूता है तो यह घोर निराशाजनक है। हालांकि आजादी के बाद सर्वाधिक मतदान 1984 के 64.01 के आंकड़े को 2014 में पीछे छोड़ा गया पर 2019 के पहले चरण के मतदान से निराशा ही हाथ लगी है। आखिर शिक्षित मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग करने के प्रति इतना गैर जिम्मेदार कैसे हो रहा है। सब कुछ को अलग कर दिया जाये तो भी इस बात से नहीं नकारा जा सकता कि देश के नागरिक का भी अपने देश के प्रति लोकतंत्र के प्रति दायित्व होता है। आखिर हम सरकार की आलोचना करने में तो पीछे नहीं रहते पर कभी हमने सोचा है क्या कि हम मताधिकार का उपयोग करने के अपने दायित्व को नहीं समझ पाते हैं। अपनी सरकार चुनने के अवसर पर हम हमारे दायित्व को कैसे भूल जाते हैं। इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी भी अपने आप में गंभीर हो जाती है। भारत जैसे देश के आम नागरिकों द्वारा इस तरह से लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी हिस्सेदारी नहीं निभाना किसी अपराध से कम नहीं माना जाना चाहिए।

हमें गर्व होता है कि हमारे देश का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। पर हमें उस समय नीचे देखने को भी मजबूर होना पड़ता है जब इतने बड़े लोकतंत्र के पर्व पर आम नागरिक अपने दायित्व को समझने और उसे पूरा करने की भूल कर बैठता है और मताधिकार का उपयोग नहीं कर व्यवस्था को ठेंगा बताने का प्रयास करते हैं। मेरा तो यहां तक मानना है कि नोटा का प्रयोग भी सही विकल्प नहीं है वहीं मतदान का बहिष्कार तो देशद्रोह से कम अपराध नहीं माना जाना चाहिए। चुनाव आयोग, राजनीतिक दलों, सर्वोच्च न्यायालय, सरकार गैरसरकारी संगठनों और समाज के प्रबुद्धजनों को सोचना होगा कि लोकतंत्र के इस महापर्व में मतदान कर अपनी आहुति देने के काम से मुंह मोड़ने वालों के प्रति कोई सख्त कदम जैसा प्रावधान होना ही चाहिए। कोई ना कोई ऐसा संदेश जाना चाहिए ताकि लोग मतदान के प्रति संवेदनशील हो और मतदान अवश्य करें। यह समूची व्यवस्था को ही सोचने को मजबूर कर देता है। आने वाले चार चरणों में होने वाले मतदान में अधिक से अधिक मतदाता हिस्सा ले इसके लिए सभी स्तर पर समन्वित प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

कांग्रेस को दलित संत का मंदिर नहीं हो रहा बर्दाश्त

पीएम मोदी ने विपक्ष को धर्म विरोधी बताया, एमपी के सागर में जमकर घेरा

सागर/ हरदा (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को बुंदेलखंड के संभागीय मुख्यालय सागर के बड़तूमा में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस दलित और ओबीसी विरोधी है। इनकी भाषा आपने सुनी है क्या। मोदी बोले इन्हें मंदिर और मंदिर जाने वालों से दिक्कत है। हमने सागर में संत रविदास जी के भव्य मंदिर का सागर में शिलान्यास किया था। कांग्रेस ने उस समय कहा था कि मंदिर की जगह यहां कुछ और बन जाता। कांग्रेस को दलित संत का मंदिर भी बर्दाश्त नहीं हो रहा है। अयोध्या में भगवान श्री राम के मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के समय इन्होंने क्या किया, पूरे देश ने देखा है।

मैं शिवराज को दिल्ली लेकर जाना चाहता हूं: मोदी

हरदा में पीएम मोदी ने मंच से पूर्व सीएम और विदिशा सीट से बीजेपी प्रत्याशी शिवराज सिंह चौहान की तारीफ की। उन्होंने कहा कि मैं शिवराज सिंह को दिल्ली ले जाना चाहता हूं।

हरदा में कहा- इंडी गठबंधन के लोग वन ईयर वन पीएम का फॉर्मूला बना रहे-पीएम मोदी ने इंडी गठबंधन पर भी जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा- सुना है ये लोग वन ईयर वन पीएम का फॉर्मूला बना रहे है।

सीएम यादव बोले- कांग्रेस गरीबों-दलितों का धन छीनना चाहती है

सागर के बड़तूमा में चुनावी सभा में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा, कांग्रेस सर्वे कराने के नाम पर हमारे गरीबों का, दलितों का धन छीनना चाहती है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी यह बात कही थी कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है।उन्होंने कहा, पीएम मोदी ने देश के 4 करोड़ लोगों को घर बनाकर दिया। यह चुनाव कांग्रेस का दूध का दूध पानी का पानी करने का है। यहां के राजा हरिसिंह गौर ने अपनी संपति दान कर विश्वविद्यालय दिया था।

भोपाल में 30 मिनट में सवा किलोमीटर चले मोदी

खुली जीप में सवार होकर किया रोड शो, लोगों ने बरसाए फूल

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार शाम को भोपाल में रोड शो किया। पीएम मोदी खुली जीप में सवार होकर 30 मिनट में करीब सवा किलोमीटर चले। उनके साथ सीएम डॉ. मोहन यादव और भोपाल से बीजेपी प्रत्याशी आलोक शर्मा भी मौजूद रहे। खास बात यह है कि पीएम मोदी के एक हाथ में भाजपा का चुनाव चिन्ह कमल का निशान नजर आया। वे लगातार जनता का अभिवादन कर रहे थे। कभी हाथ हिलाकर तो कभी दोनों हाथ जोड़ते नजर आए। लोगों ने भी फूल बरसाकर पीएम मोदी का स्वागत किया। रोड शो मालवीय नगर से नानके पेट्रोल पंप तक चला। मोदी के रोड शो के रूट पर दोनों ओर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। वे पीएम मोदी की तस्वीरें खींचते रहे। जगह जगह स्वागत मंच भी बनाए गए थे।

सीएम ने कहा- ऐसा रोड शो कभी नहीं हुआ

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा- आज भोपाल और मध्यप्रदेश के लिए ऐतिहासिक दिन है। जनता का उत्साह और उमंग बता रहा है कि पूरा प्रदेश मोदीमय हुआ है। देश के दिल मध्यप्रदेश और मध्यप्रदेश के दिल भोपाल में जिस प्रकार पीएम मोदी का रोड शो हुआ है ऐसा रोड शो कभी नहीं हुआ।

राहुल बोले-कांग्रेस का मेनिफेस्टो देखकर पीएम घबरा गए

- **भाजपा दलित-ओबीसी की हिस्ट्री मिटाना चाहती है, जाति जनगणना को कोई शक्ति नहीं रोक सकती**

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी के समाजिक न्याय सम्मेलन कार्यक्रम में राहुल गांधी ने कहा- कांग्रेस का मेनिफेस्टो देखकर पीएम घबरा गए हैं। यह क्रांतिकारी घोषणापत्र है। हमने जाति जनगणना कराने का वादा किया है। भाजपा दलित-ओबीसी की हिस्ट्री को मिटाना चाहती है। आपकी हिस्ट्री की जड़ को एक बार फिर लगाना होगा। जाति जनगणना को कोई शक्ति नहीं रोक सकती है। मोदी ने 10 साल देश से कहा कि वो ओबीसी हैं। जैसे ही मैंने जाति जनगणना की बात की तो मोदी बोलने लगे की देश में सिर्फ दो जाति हैं अमीर और गरीब। मैं कहता हूं कि गरीबों की लिस्ट निकालिए, उसमें आपको दलित, आदिवासी-ओबीसी मिल जाएंगे, लेकिन अमीरों की लिस्ट में आपको ये तीनों समुदाय के लोग नहीं मिलेंगे। अगर आप सुपरपावर बनना चाहते हो 90 परसेंट (ओबीसी, आदिवासी,दलित) की शक्ति का प्रयोग करना होगा। ये लोग अपने आपको देशभक्त कहते हैं, लेकिन एक्सरे यानी जनगणना से डरते है। ये मेरे लिए सामाजिक न्याय एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है। ये अब मेरी लाइफ का मिशन है। लाइफ मिशन में कॉम्प्रोमाइज नहीं हो सकता है।

चुनाव नहीं कर सकते कंट्रोल 'ईसी' पर भरोसा करना होगा

ईवीएम-वीवीपैट मामले में सुप्रीम कोर्ट की दो टूक,फैसला रखा सुरक्षित

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के जरिए से डाले गए वोटों का पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपैट) के साथ पूर्ण सत्यापन करने को लेकर दायर याचिकाओं पर फैसला सुरक्षित रख लिया। इस दौरान कोर्ट ने अहम टिप्पणी करते हुए साफ किया कि वह चुनावों के लिए कंट्रोलिंग अथॉरिटी नहीं है और संवैधानिक अथॉरिटी भारत के चुनाव आयोग के कामकाज को निर्देशित नहीं कर सकता है। सुनवाई के दौरान, अदालत ने कहा, हम उन चुनावों को कंट्रोल नहीं कर सकते, जो किसी अन्य संवैधानिक प्राधिकरण (चुनाव आयोग) द्वारा आयोजित किए जाने हैं। अदालत ने कहा कि चुनाव निकाय (चुनाव आयोग) ने संदेह को दूर कर दिया है। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच ने कहा कि वह महज संदेह के आधार पर कार्रवाई नहीं कर सकती। इस याचिका को एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने सुप्रीम कोर्ट में दायर की थी। एडीआर की ओर से पेश हुए वकील प्रशांत भूषण के सवालों का जवाब देते हुए कोर्ट ने कहा कि यदि आप किसी विचार-प्रक्रिया के बारे में पूर्वनिर्धारित हैं, तो हम आपकी मदद नहीं कर सकते। हम यहां आपके विचार को बदलने के लिए नहीं हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन की कार्यप्रणाली के कुछ खास पहलुओं पर बुधवार को चुनाव आयोग से स्पष्टीकरण मांगा था, साथ ही निर्वाचन आयोग के एक शीर्ष अधिकारी को दोपहर दो बजे तलब किया था।

चुनाव आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी के अदालती सवालों का जवाब देने के लिए आने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच ने कहा कि उसे कुछ पहलुओं पर स्पष्टीकरण की जरूरत है, क्योंकि ईवीएम पर अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों (एफएक्यू) के बारे में निर्वाचन आयोग ने जो उत्तर दिए हैं उनमें कुछ भ्रम है। बेंच ने निर्वाचन आयोग की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल ऐश्वर्या भाटी से कहा, हम गलत साबित नहीं होना चाहते, बल्कि अपने निष्कर्षों को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहते हैं और इसलिए हमने स्पष्टीकरण मांगने का सोचा। बेंच ने भाटी को वरिष्ठ उप निर्वाचन आयुक्त नितेश कुमार व्यास को दोपहर दो बजे बुलाने के लिए कहा। व्यास ने इससे पहले ईवीएम की कार्यप्रणाली पर अदालत में एक प्रस्तुति दी थी।

कर्नाटक में मुस्लिम आरक्षण को लेकर घिरी कांग्रेस

एनसीबीसी ने जारी किए आंकड़े, बीजेपी हुई हमलावर

बेंगलुरु (एजेंसी)। देश के संसाधनों पर मुस्लिमों के पहले हक को लेकर छिड़ी बहस के बीच कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। राज्य सरकार ने मुसलमानों की सभी जातियों और समुदायों को राज्य सरकार के तहत रोजगार और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण के लिए ओबीसी की लिस्ट में शामिल किया है। इस बात की जानकारी खुद राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग यानी कि एनसीबीसी के द्वारा दी गई है।

कर्नाटक सरकार के पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग का कहना है कि मुस्लिम और ईसाई जैसे समुदाय न तो जाति हैं और न धर्म। 2011 की जनगणना के मुताबिक, राज्य में मुस्लिम आबादी केवल 12.92 फीसदी ही है। इसलिए इन्हें अल्पसंख्यक की श्रेणी में रखा जाता है। ओबीसी आरक्षण की कैटेगरी एक में 17 सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ी जातियों, कैटेगरी 2 में 19 जातियों के लिए आरक्षण का प्रावधान किया है और कुल मिलाकर 393 जातियां इस लिस्ट का हिस्सा हैं। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज अहीर ने इस फैसले की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि पिछड़ी जाति के रूप में मुस्लिमों का वर्गीकरण सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर असर डालता है और कमजोर करता है। धर्म के आधार पर दिया गया आरक्षण साफतौर पर सामाजिक न्याय की नैतिकता को प्रभावित करता है।

नितिन गडकरी महाराष्ट्र में चुनावी रैली में हुए बेहोश

मुंबई (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी महाराष्ट्र के यवतमाल में चुनावी रैली के दौरान बेहोश हो गए। वे यहां एनडीए की शिवसेना प्रत्याशी राजश्री पाटिल के समर्थन में चुनावी रैली को संबोधित करने आए थे। गडकरी बोल ही रहे थे कि अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी और वे बेहोश हो गए। मंच पर मौजूद लोग उन्हें अस्पताल ले गए। घटना के कुछ देर बात नितिन गडकरी ने पोस्ट करके बताया कि वह स्वस्थ हैं। उन्होंने लिखा- रैली के दौरान गर्मी की वजह से असहज महसूस किया लेकिन अब पूरी तरह से स्वस्थ हूं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40 °c | न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 25 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पंचायत को मजबूत किए बिना ग्रामीण विकास संभव नहीं

भोपाल। पंचायती राज संस्थानों (पीआरआई) को सशक्त बनाने की दिशा में मध्य प्रदेश के लिए वर्तमान अवसर और आगे की रूपरेखा विषय पर बुधवार को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया (टीआरआई) की ओर से सेमिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान मध्य प्रदेश में पीआरआई की मौजूदा स्थिति और आगामी कार्ययोजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में आयोजित इस सेमिनार में सेवानिवृत आईएएस पीपी सोती, नेशनल इंस्टीटूट ऑफ़ गवर्नेंस के पूर्व निदेशक प्रोफ़ेसर (डॉ.) एच एम मिश्रा, डिबेट संस्था के निदेशक अमिताभ सिंह और स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) की सहायक प्रोफेसर अपर्णा सोनी और टीआरआई के कुमार संजय ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस दौरान राज्य में पीआरआई को मजबूत करने की वर्तमान परिचालन रूपरेखा और केंद्र (एमओपीआर और अन्य संबंधित विभाग) द्वारा बनाए गए आदेश/प्रावधान पर चर्चा की गई। साथ ही स्थानीय जीपीडीपी (ग्राम पंचायत विकास योजना) का प्रावधान और रूपरेखा और राज्य में ओएसआर जीपी बनाने के अवसर के साथ सत्र के दौरान एक लघु वीडियो प्रदर्शित की गई।

कार्यक्रम के दौरान लोकल गवर्नेंस विशेषज्ञ और नेशनल इंस्टीट्यूट आफ गवर्नेंस एंड अर्बन मैनेजमेंट के डायरेक्टर प्रो. डॉ एच एम मिश्रा ने कहा कि पंचायती राज व्यवस्था सरकार की प्राथमिकता में सबसे नीचे है, जबकि यह ग्रामीण स्तर पर विकास में सबसे अधिक प्रभावी हो सकता है। स्वतंत्रता के

बाद ग्रामीण भारत के विकास को लेकर बहस तीखी हुई। उन्होंने कहा कि डिजिटलाइजेशन ने भ्रष्टाचार को पंचायत स्तर पर विकेंद्रीकृत कर दिया है। उन्होंने विभिन्न कमेटियों का जिक्र करते हुए बताया कि आजादी के बाद हमें गरीबी और जातिवाद विरासत में मिले थे। शुरुआती कमेटियों ने पंचायतों को सशक्त करने के बजाय विकास पर जोर दिया, बाद में पंचायतों को सशक्त करने पर जोर दिया गया। मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था शुरू होने पर कई अधिकार दिए गए, लेकिन उन अधिकारों को बाद में वापस भी ले लिया गया। उन्होंने भारत में पंचायती राज व्यवस्था के वैदिक कालीन, एपिक कालीन और महाजनपदीय उदाहरणों के साथ अपनी बात शुरू की और बताया कि आज भी पंचायतों में विकास की अवधारणा पर काफी काम किया जाना जरूरी है। कार्यक्रम में सेवानिवृत आईएएस पीपी सोती ने कहा कि निचले स्तर पर सरकारों की मंशा को ही लागू किया जाता है। इसे कोई भी नाम दे दिया जाए, लेकिन यदि उच्च स्तर पर प्रबंधन और नीयत ठीक नहीं है, तो फिर निचले स्तर पर इसे लागू करना काफी कठिन होता है। पंचायती राज की खूबियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि एक जमाने में मध्य प्रदेश में महज 20 हजार पेंशन मिलती थीं, जो आज बढ़कर साढ़े तीन लाख से अधिक हो गई हैं, और यह पंचायत स्तर पर अधिकारों को बढ़ाने से ही संभव हो सका है।

डिबेट संस्था के निदेशक अमिताभ सिंह ने कहा कि पंचायत स्तर पर आम नागरिकों की भागीदारी और पंचायतों को मजबूत करने की दिशा में सीएसओ की महत्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन अफसोस है कि हम इसे ठीक से लागू नहीं कर सके हैं। पंचायतों को जो अधिकार कानून ने दिए हैं, उन्हें उनका ज्ञान है, लेकिन उच्च स्तर पर और प्रशासनिक तंत्र अपनी भूमिका को सीमित नहीं करना चाहता है। प्रशासन की भूमिका पंचायत स्तर पर सहयोगी की है, लेकिन वह सारी योजनाओं को अपने मुताबिक संचालित करता है, इससे काफी गलतफहमी पैदा होती है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में आज भी लोग सवाल पूछते हैं और पंचायतों के स्तर पर अधिकार देने से ही यह संभव हो सका है। सवाल पूछ रहे नागरिक ही पंचायत स्तर पर विकास को आगे ले जा सकते हैं। स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) की सहायक प्रोफेसर अपर्णा सोनी ने अपने पीपीटी प्रजेंटेशन के जरिये पंचायतों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया और साथ ही उन्होंने सीहोर की बिलकिसगंज पंचायत के विकास प्लान में आए बदलावों के जरिये बताया कि पंचायती राज में हर तरह के विकास की संभावना है, लेकिन उसे पहले से तैयार करना होगा और लंबी रणनीति के तहत काम करने की जरूरत पर बल दिया।

'पंचायती राज दिवस' के अवसर पर आयोजित इस परामर्श आयोजन में टीआरआई के कुमार संजय ने सीएसओ, प्रशासन और पंचायती राज संस्थाओं के मेलजोल से विकास की अवधारणा का खाका प्रस्तुत करते हुए कहा कि पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाना हम सभी की जिम्मेदारी है और सभी अपने अपने तरह के प्रयास भी कर रहे हैं, लेकिन यदि यह प्रयास मिलजुलकर और दीर्घकालीन रणनीति के तहत किए जाते हैं, तो इनका असर जल्द ही दिखाई देगा।

भोजशाल में एएसआई सर्वे का 34वां दिन

24 अधिकारी, 29 मजदूरों और पक्षकारों की मौजूदगी में हो रहा काम

धार (नप्र)। केंद्रीय पुरातत्व विभाग के अधीन धार की भोजशाला में वैज्ञानिक पद्धति से सर्वेक्षण चल रहा है। आज 34वें

दिन एएसआई की टीम ने सुबह 8 बजे भोजशाला में प्रवेश किया। अब पूरे दिन टीम के सदस्य सर्वे के तहत अलग-अलग बिंदुओं पर काम करेंगे। बुधवार को एएसआई के 24 अधिकारी, कर्मचारी, 29 मजदूरों व पक्षकारों की मौजूदगी में सर्वे किया जा रहा है। पिछले दो दिनों से उत्तर और दक्षिण क्षेत्र में उत्खनन चल रहा हैं, जिसे ही आज आगे बढ़ाया जा रहा है।वहीं कमाल मौलाना दरगाह परिसर में केमिकल ट्रीटमेंट के कार्य को भी गति मिलेगी। यहां शिलालेख की सफाई करने के साथ ही पेपर स्टांप पर उकेरने का काम चल रहा है। भोजशाला के गर्भगृह में स्तंभों की विशेष वीडियोग्राफी व फोटोग्राफी की गई।भोजशाला के मुख्य परिसर के साथ ही 50 मीटर के दायरे में आने वाले कई स्थलों का बारीकी से परीक्षण किया जाना अभी शेष है। कल भी टीम के सदस्यों ने इसी तरह से काम किया था। अब इन भाषाओं का अध्ययन किया जाएगा। बताया जा रहा हैं, कि टीम के सदस्य पहले इन स्तंभों व आकृतियों पर केमिकल का उपयोग करके उसे साफ कर रहे है।

मिशन लोकसभा

ध्रुवीकरण के 'शोर' को थाम रही विपक्ष की यह 'खामोशी'!

- यूपी में अखिलेश का मुस्लिम से परहेज, क्या बदलेगा परिणाम

लखनऊ (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी की राजस्थान की रैली में अल्पसंख्यकों का संदर्भ लेकर दिए एक बयान पर राजनीति गर्म है। इसे ध्रुवीकरण का स्ट्रोक बताया जा रहा है। कांग्रेस चुनाव आयोग के दरवाजे पर है लेकिन, उत्तर प्रदेश के मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव अपनी प्रतिक्रिया में 'मुस्लिम' शब्द तक से परहेज करते हुए 'खास समुदाय' लिख रहे हैं। यह परहेज अनायास ही नहीं है। पिछले चुनावों में सांप्रदायिक सवालों पर मुखर प्रतिक्रियाओं से उपजी लहर विपक्ष की उम्मीदों को बहा चुकी है इसलिए, यूपी के चुनावी रण में विपक्ष ने ध्रुवीकरण के 'शोर' को थामने के लिए 'खामोशी' की रणनीति अपनाई है। यूपी में पहले चरण की 8 सीटों पर चुनाव हो चुका है। दूसरे चरण की 8 सीटों पर 26 को मत पड़ेंगे।

रामदेव-बालकृष्ण ने विज्ञापन केस में दूसरा माफीनामा छपवाया

- कोर्ट ने कहा था-साइज ऐसा न हो कि माइक्रोस्कोप से पढ़ना पड़े

नई दिल्ली (एजेंसी)। पतंजलि, बाबा रामदेव और बालकृष्ण ने बुधवार को अखबारों में एक और माफीनामा

छपवाया। इसमें बिना शर्त कोर्ट से माफी मांगी गई है। पतंजलि पर अखबारों में विज्ञापन देकर एलोपैथी के खिलाफ निगेटिव प्रचार करने का आरोप है। मामले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई चल रही है।

अमेठी से राहुल, रायबरेली से प्रियंका का चुनाव लड़ना तय

कांग्रेस ने इंटरनल सर्वे के बाद लिया फैसला, 26 अप्रैल के बाद होगा ऐलान

लखनऊ (एजेंसी)। अमेठी से राहुल गांधी और रायबरेली से प्रियंका गांधी का चुनाव लड़ना तय है। कांग्रेस ने इन दोनों सीटों पर इंटरनल सर्वे कराया। इसकी रिपोर्ट के आधार पर तय हुआ कि दोनों सीटों पर गांधी परिवार से ही प्रत्याशी उतारा जाएगा। प्रियंका अगर रायबरेली से उतरती हैं तो यह उनका पहला चुनाव होगा। राहुल वायनाड (केरल) से चुनाव लड़ रहे हैं, वहां 26 अप्रैल को वोटिंग है। इसके बाद कांग्रेस कभी भी अमेठी और रायबरेली से प्रत्याशियों का ऐलान कर देगी। दोनों सीटों पर नामांकन की आखिरी तारीख 3 मई है, यहां पांचवें फेज में 20 मई को वोटिंग होगी। सूत्रों के मुताबिक, राहुल-प्रियंका 30 अप्रैल तक नामांकन कर सकते हैं। अमेठी और रायबरेली सीट पर मार्च के पहले हफ्ते से लेकर 15 अप्रैल तक इंटरनल सर्वे कराया गया। इसमें पार्टी वर्कर्स और निजी एजेंसी भी शामिल हुई। इसमें दो सवाल पूछे गए। राहुल/प्रियंका को लेकर आप क्या सोचते हैं। कांग्रेस सरकार में अमेठी/रायबरेली में किए गए कामों से आप कितना संतुष्ट हैं। इस सवाल पर पंचायत स्तर पर पहुंचकर लोगों का भी फीडबैक लिया गया। रिपोर्ट में आया कि गांधी परिवार को लेकर पॉजिटिव रिस्पॉन्स है। सर्वे के मुताबिक, अमेठी से राहुल और रायबरेली से प्रियंका गांधी चुनाव जीत सकते हैं।

ओवैसी बोले-26 अप्रैल जुमा का दिन,शैतान कामयाब नहीं होगा

- बिहार के किशनगंज में कहा-मोदी सिर्फ नफरत की गारंटी दे सकते हैं

किशनगंज (एजेंसी)। किशनगंज में एआईएमआईएम सुप्रीमो असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि 26 अप्रैल को आपको एक तारीख बनाना है। उस दिन जुमा का दिन है,

मुबारक दिन है और उस दिन शैतानी ताकत को कामयाबी नहीं मिलेगी। ना ही शैतान को कामयाबी मिलेगी। उस दिन किसकी कामयाबी होगी, आपकी कामयाबी होगी इसलिए नमाज पढ़ने के पहले और बाद दोनों समय वोट डालिए। ओवैसी ने कहा कि मोदी सिर्फ इस देश के मुसलमान से नफरत की गारंटी दे सकते है। जब वह दुबई जाते हैं तो सब से गले मिलते हैं, हाथ पकड़ कर चलते हैं। वहीं जब भारत के मुसलमान की बात आती है तो हम लोग घुसपैठिया हो जाते हैं। हम अगर घुसपैठिया हैं तो वह बताएं आरएसएस ने भारत की आजादी में क्या योगदान दिया है।

पटवारी बोले-बीजेपी के लोग मोदी को भगवान बनाने में लगे

पीएम के दौरे से पहले पूछे सवाल-क्या मंत्रालय की आग में फाइलें जलाने की जांच कराएंगे

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज मप्र के दौरे पर आ रहे हैं। सागर, हरदा में जनसभाओं को संबोधित करने के बाद शाम को पीएम भोपाल पहुंचकर रोड-शो करेंगे। पीएम के मप्र दौरे के पहले पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा ने जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस की। पटवारी ने पीएम मोदी से सवाल पूछे हैं। वहीं कांग्रेस के राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने कहा -आज संविधान और लोकतंत्र खतरे में है। इसे केवल जनता चुनाव में वोट डाल कर बचा सकती है। आखिर, बीजेपी 400 पार का नारा इसीलिए लगा रही है, क्योंकि बीजेपी संविधान में बदलाव करना चाहती है। जबकि, भारत का संविधान एक बेहतरीन संविधान है। भारत का संविधान लोकतांत्रिक, प्रजातांत्रिक और अभिव्यक्ति की आजादी देता है, पर आज कोई खुल कर बोल नही सकता है।

भाजपा अब सरकार माफिया बन गई है-पीएम मोदी के एमपी दौरे के पहले पटवारी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा- देश में कथित अमृतलाल चल रहा है एवं इसमें संविधान, बाबासाहब अंबेडकर के विचार, वोट का अधिकार एवं मीडिया की आजादी बचाने की लड़ाई चल रही है। मोदी जी के शासनकाल में 17 सरकारें गिराई गई, 500 से ज्यादा विधायक एवं कई सांसद इधर उधर हुए। जैसे शराब माफिया,भू माफिया, शिक्षा माफिया होते हैं वैसे ही भाजपा अब सरकार माफिया बन गई है।

बीजेपी के लोग मोदी को भगवान बनाने में लगे हैं-पटवारी ने कहा कि क्योंकि प्रधानमंत्री आज रोड शो कर रहे हैं इसलिए, अब वे शोमैन हो गए हैं। भाजपा कहती है कि वे भगवान के अवतार हैं, मुख्यमंत्री ने उन्हें बजरंगबली का अवतार बताया तो बजरंगबली के अवतार यह बताएं कि मध्य प्रदेश की 1.29 करोड़ लाडली बहनों के खाते में 1250 रुपए ट्रांसफर किए जा रहे थे और चुनावके बाद 3000 प्रतिमाह की मोदी की गारंटी के लिए क्या किया जा रहा है? सरकार यह पैसा कब से देना शुरू करेगी? भाजपा सरकार ने मोदी की गारंटी के तहत कहा था कि लाड़ली बहना योजना की हितग्राही महिलाओं और प्रधानमंत्री उज्जवला योजना की हितग्राही महिलाओं को योजना का लाभ मिलेगा।

2 मई को मुरैना में प्रियंका गांधी का रोड शो

लोकसभा चुनाव के हर चरण में कांग्रेस के नेशनल लीडर्स का म.प्र.में सिर्फ एक दौरा, पीएम हर 5वें दिन आ रहे

भोपाल (नप्र)। म.प्र.में आज शुक्रवार 26 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान होना है। इस दूसरे चरण में मप्र की 7 सीटों टीकमगढ़, दमोह, खजुराहो, सतना, रीवा, होशंगाबाद और बैतूल में वोट डाले जाएंगे। इसके बाद 7 मई को तीसरे चरण में और 13 मई को चौथे चरण में 8-8 सीटों पर मतदान होगा।

अब तक कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे के मप्र में सिर्फ एक-एक दौरा हुआ है। अब तीसरे चरण के चुनाव प्रचार में प्रियंका गांधी मुरैना के दौरे पर आएंगी। मुरैना में 2 मई को प्रियंका गांधी का रोड-शो होगा।

25 अप्रैल को म.प्र. आएंगे सचिन पायलट

राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट आज 25 अप्रैल को मप्र के दौरे पर आएंगे। सचिन पायलट 2024 के लोकसभा में मध्यप्रदेश में पहली बार प्रचार करने आएंगे। सचिन पायलट, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव और राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा के साथ 25 अप्रैल को उज्जैन, मंदसौर और देवास जिले में लोकसभा प्रत्याशी महेश परमार और दिलीप गुर्जर के पक्ष में जनसभाओं को संबोधित करेंगे।

पीसीसी चीफ पटवारी, सचिन पायलट, अरुण यादव और विवेक तन्खा 25 अप्रैल को हेलीकाप्टर द्वारा सुबह 9.30 भोपाल से रवाना होकर सुबह 10.30 बजे उज्जैन पहुंचेंगे और वहां लोकसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी महेश परमार की नामांकन रैली में शामिल होने के बाद जनसभा को संबोधित करेंगे।

दोपहर 12.30 बजे उज्जैन से हेलीकाप्टर से प्रस्थान कर दोपहर 1 बजे मंदसौर पहुंचेंगे और वहां लोकसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी दिलीप गुर्जर की नामांकन रैली में शामिल होंगे व जनसभा को संबोधित करेंगे।

दोपहर बाद 3.00 बजे मंदसौर से प्रस्थान कर अपरान्ह 3.40 बजे सोनकच्छ विधानसभा के बालोन पहुंचकर वहां कांग्रेस द्वारा आयोजित स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होंगे, इसके बाद नेतागण शाम 5.30 बजे बालोन से हेलीकाप्टर से रवाना होकर शाम 6 बजे भोपाल पहुंच जाएंगे।

कांग्रेस के नेशनल लीडर का सिर्फ एक दौरा

पहले चरण के चुनाव प्रचार के दौरान राहुल गांधी 8 अप्रैल को मंडला लोकसभा क्षेत्र के केवलारी विधानसभा क्षेत्र के धनौरा गांव में जनसभा करने पहुंचे थे। इसके बाद उन्होंने शहडोल में कांग्रेस प्रत्याशी फुन्देलाल सिंह मार्को के समर्थन में जनसभा को संबोधित किया था। दूसरे चरण में राहुल गांधी 21 अप्रैल को सतना के दौरे पर आने वाले थे। लेकिन ऐनवक्त पर उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। और उनकी जगह कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे सतना आए थे। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी सिद्धार्थ कुशवाहा के समर्थन में जनसभा को संबोधित किया था।

दिग्विजय के यहां किसी बड़े लीडर की सभा नहीं

तीसरे चरण में 7 मई को राजगढ़ में भी मतदान होना है। राजगढ़ से पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। दिग्विजय ने वाहनों के काफिले के साथ

शक्ति प्रदर्शन करने, हेलीकॉप्टर के बजाए पदयात्रा कर चुनाव प्रचार अभियान की शुरुआत की थी। दिग्विजय का फोकस बूथ पर है। सूत्रों की मानें तो दिग्विजय सिंह बड़े नेताओं की जनसभाओं और रोड-शो, रैली नहीं कराना चाहते। दिग्विजय ने पूरा फोकस बूथ पर कर रखा है। नामांकन फार्म दाखिल करने वाले दिन उन्होंने सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से बूथ पर जाकर बैठक करने को कहा था। कांग्रेस के सूत्र बताते हैं कि दिग्विजय के यहां किसी बड़े नेता जैसे राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे, प्रियंका गांधी की सभाएं नहीं होंगी।

सचिन पायलट आज उज्जैन - मंदसौर में रोड शो करेंगे

देवास में चुनावी सभा में शामिल होंगे

भोपाल (नप्र)। राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट 25 अप्रैल को मध्यप्रदेश

आएंगे। 2024 के लोकसभा चुनाव में यह उनका पहला एमपी दौरा होगा। पायलट गुर्जर बहुल सीटों पर कांग्रेस प्रत्याशियों के पक्ष में समर्थन मांगेंगे। वे देवास लोकसभा की सोनकच्छ विधानसभा के बालोन में जनसभा को संबोधित करेंगे। उज्जैन और मंदसौर में कांग्रेस प्रत्याशी की नामांकन रैली में शामिल होंगे। सभा को भी संबोधित करेंगे। पीसीसी चीफ पटवारी, सचिन पायलट, अरुण यादव और विवेक तन्खा हेलिकॉप्टर से सुबह 9.30 बजे भोपाल से रवाना होकर सुबह 10.30 बजे उज्जैन पहुंचेंगे।

बुर्ज खलीफा अब नहीं रह जाएगी दुनिया की सबसे ऊंची बिल्डिंग

थाईलैंड ने बनाया 'आठवें अजूबे' का महाप्लान, शुरू कर दी तैयारी

बैंकाक (एजेंसी)। आज के समय दुनिया की सबसे ऊंची बिल्डिंग बुर्ज खलीफा है लेकिन अब इससे भी बड़ी बिल्डिंग बनाने का प्लान किया जा रहा है, जिसके आगे बुर्ज खलीफा भी बौना लगेगा। यह महत्वाकांक्षी योजना थाईलैंड में आकार लेगी। इस विशाल इमारत को बैंकॉक में उसी कंपनी की ओर से बनाया जा सकता है, जिसने दुबई में रेकॉर्ड तोड़ने वाला टावर बनाया था। थाई प्रधानमंत्री श्रेथा थाविसिन ने शुक्रवार को अपने एक्स अकाउंट पर चीनी और मध्य पूर्व की कंपनियों के साथ मीटिंग की डिटेल शेयर करते हुए घोषणा की। इस प्रोजेक्ट की सटीक ऊंचाई और लागत की स्पष्ट जानकारी नहीं है लेकिन मेगास्ट्रक्चर कथित तौर पर बुर्ज खलीफा से दुनिया की सबसे ऊंची इमारत का खिताब छीन लेगा। इस टॉवर का नाम क्या होगा इसकी जानकारी नहीं है लेकिन एक ही टॉवर में ऑफिस, होटल और एंटरटेनमेंट हब शामिल होंगे। इस परियोजना में एक मनोरंजन केंद्र, कसीनो, एक बड़ा वित्तीय केंद्र और डिपार्टमेंटल स्टोर शामिल होगा।

पानी के लिए इंदौर में बेंगलुरु जैसे हालात नहीं बने हैं

इंदौर। इंदौर एक पानीदार शहर है, लेकिन यहां की नदी आईसीयू में पहुंच गई है। उसकी बीमारी का सही ईलाज करने के बजाय आप उसे ब्यूटी पार्लर में ले जा रहे हैं। मैं 1994 में पहली बार इंदौर आया था। यह ऐसा सांस्कृतिक शहर है, जो किसी भी मुद्दे पर सामूहिक चिंतन कर उनका निराकरण ढूंढ लेता है। हर जगह वाटर रिचार्जिंग कामयाब नहीं होते। यह समझ से परे बात है कि जब यहां नर्मदा का अगला चरण आ गया तो फिर धरती का पेट खाली कर बोरिंग क्यों किए जा रहे हैं। यहां का वास्तविक वाटर बैंक बहुत तेजी से खाली हो रहा है। शहर के युवा महापौर को इस मामले में पूरी संजीदगी के साथ प्रयास करना होंगे। शहर में अभी बेंगलुरु जैसे हालात नहीं बने हैं।

पानी वाले बाबा के नाम से प्रख्यात और तरुण भारत संघ के संस्थापक जल विशेषज्ञ राजेंद्र सिंह ने कही। वे प्रेस क्लब सभागृह में संस्था सेवा सुरभि द्वारा बेंगलुरु जैसे जल

संकट से बचने के लिए क्या करें इंदौर विषय पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर वक्ता उपस्थित थे। उन्होंने आगे कहा कि यहां के लोग एक साथ बैठकर किसी भी समस्या पर चिंता और चिंतन कर लेते हैं और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर निर्णय लेते हैं। मैं लंबे समय बाद यहां आया हूं और कुछ हद तक देखा भी है कि यहां क्या-क्या बदला है। यह शहर अभी भी पानीदार है।

1994 में पहली बैठक में नर्मदा के अगले चरण के पानी को इंदौर लाने की बात हुई थी, जो अब पूरी हो चुकी है, लेकिन कुछ बातें चिंताजनक कही जाना चाहिए - एक तो यह कि यहां का जो वास्तविक वाटर बैंक है वह बहुत तेजी से खाली हो रहा है। धरती के नीचे का पानी क्यों निकाला जा रहा है, जबकि यहां नर्मदा का पानी आ चुका है, यह समझ परे है। दूसरी बात यह है कि हर जगह वाटर रिचार्जिंग कामयाब नहीं होते। जहां धरती के ऊपर लगे पौधों से सामान्य रूप से पता चल जाता है कि वहां की मिट्टी में पानी है या नहीं। इसलिए यह जरूरी है कि जहां भी रिचार्ज करना है, वहां पहले जांच कर लें और उसके बाद रिचार्ज करें। जहां तक इंदौर की नदी की बात है मुझे लगता है कि वह आईसीयू में चली गई है। उसे एक बहुत बड़े डॉक्टर की जरूरत है। बीमारी कुछ और है, लेकिन उसका उपचार आप ब्यूटी पार्लर में ले जाकर कर रहे हैं। इस पर जो भी पैसा भी पैसा खर्च हो रहा है, वह सही उपचार पर होना चाहिए।

आबकारी विभाग ने एक दिन में बनाये 36 प्रकरण, जब्त की लाखों की अवैध शराब

इंदौर। आबकारी विभाग द्वारा अवैध शराब की धड़पकड़ के लिए लगातार कार्रवाई की जा रही हैं। विभाग ने मंगलवार को एक दिन में 36 प्रकरण अवैध शराब की बिक्री और परिवहन के बनाए। इसमें लाखों रुपये की अवैध शराब और दोपहिया वाहन जब्त किए गए। लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होने के बाद से शराब की अवैध बिक्री और परिवहन को लेकर कार्रवाई की जा रही है। आबकारी विभाग के विभिन्न वृत की टीमें लगातार कार्रवाई कर रही हैं। सहायक आबकारी आयुक्त मनीष खरे के निर्देशन में आबकारी विभाग इंदौर द्वारा अवैध मदिरा के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में गत सोमवार को आबकारी वृत मालवा मिल प्रभारी उप निरीक्षक महेश पटेल द्वारा कार्यवाही करते हुए पोलोग्राउंड के पास इंडस्ट्रियल एरिया में रोड पर एक एक्टिवा से 12 बोतल व्हिस्की परिवहन करते हुए संतोष पिता ताराचंद को पकड़ा गया। इसी के साथ मरीमाता चौराहे के पास मेन रोड पर एक हीरो प्लेजर से 50 पाव देशी मदिरा प्लेन के परिवहन करते हुए आरोपी पीयूष पिता कैलाश को पकड़ा गया।

370 लीटर शराब जप्त

इंदौर जिले के सभी वृत्तों में की गई कार्यवाही में कुल 36 प्रकरण पंजीबद्ध कर 370 लीटर शराब जब्त की गई। वहीं 2415 लीटर महुआ लहान को मौके पर नष्ट किया गया। मदिरा के अवैध परिवहन में 2 दोपहिया वाहन भी जब्त किए। किये गए । जप्त समस्त सामग्री का बाजार मूल्य 4.50 लाख रुपये है।

बहन से झगड़ा होने पर मां ने डांटा तो 17 वर्षीय बेटे ने दे दी जान

इंदौर । शौर्य को अपने परिवार के साथ बुधवार को एक रिश्तेदार के यहां विवाह समारोह में जाना था।मां ने मंगलवार रात को दोनों भाई बहन को कपड़े पैक करने को कहा था। इस दौरान दोनो के बीच झगड़ा होने लगा। शौर्य ने अपनी छोटी बहन को चांटा मार दिया। मामला एयरपोर्ट रोड क्षेत्र की पद्मालय कॉलोनी का है। यहां रहने वाले शौर्य पिता अशोक कदम ने पहली मंजिल पर अपने रुम में फांसी लगा ली। परिजनों ने दरवाजा तोड़कर उसे फंदे से उतारा और अस्पताल ले गए, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। पुलिस को उसके कमरे से सुसाइड नोट तो नहीं मिला, लेकिन परिजनों ने दिन में हुए झगडे की बात पुलिस को बताई, जो आत्महत्या की वजह हो सकती है। शौर्य को अपने परिवार के साथ बुधवार को एक रिश्तेदार के यहां विवाह समारोह में जाना था। मां ने मंगलवार रात को दोनों भाई बहन को कपड़े पैक करने को कहा था। इस दौरान दोनों के बीच झगड़ा होने लगा। शौर्य ने अपनी छोटी बहन को चांटा मार दिया। यह बात मां को चली तो उन्होंने शौर्य को डांटा। मां की डांट से

वह रुठ कर अपने कमरे में चला गया। बहुत देर तक वह नीचे नहीं आया तो माता-पिता ने बेटी को मनाने के लिए कमरे में भेजा, लेकिन उसने दरवाजा नहीं खोला। फिर पिता उपर पहुंचे। दरवाजा नहीं खोलने पर खिड़की से उन्होंने झांक कर देखा तो शौर्य फांसी पर लटका हुआ था। उसे पिता अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। शौर्य के पिता प्रापर्टी ब्रोकर है। शौर्य ने इस साल 12 वीं की परीक्षा दी थी और वह इंजीनियरिंग की तैयारी भी कर रहा था। परिजनों ने कहा पता नहीं था कि शौर्य इतनी सी बात से रुठ कर अपना जीवन समाप्त कर लेगा। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

काम की खबर

मिलावटी खाद्य पदार्थ की आशंका होने पर आप ऐसे कर सकते हैं जांच

मार्गदर्शन- खाद्य सामग्री में मिलावट की पहचान

इंदौर। खाद्य पदार्थों को लेकर कई लोगों के मन में यह सवाल होता है कि कहीं इसमें मिलावट तो नहीं है। यदि ऐसा कुछ लग रहा है तो खाद्य पदार्थों की घर पर भी स्वयं जांच कर सकते हैं। इसकी जांच के लिए यूट्यूब पर डीएआरटी एफएसएसएआई द्वारा अलग-अलग खाद्य पदार्थों के वीडियो अपलोड किए हुए हैं। इनके माध्यम से आसानी से पता कर सकते हैं, वहीं किसी भी खाद्य विभाग की मिलावट की शंका है तो वाट्सएप पर 9406764084 पर शिकायत कर सकते हैं। यदि आप अपना नाम और मोबाइल नंबर भी नहीं बताना चाहते हैं तो एमपीएफडीएएमआइएस.इन पर शिकायत कर सकते हैं। वहीं फूड सेफ्टी कनेक्ट ऐप भी शिकायत की जा सकती है।

कांग्रेस को फिर बड़ा झटका देने की तैयारी, कल मुख्यमंत्री मोहन यादव की उपस्थिति में 8000 कांग्रेसी भाजपा में होंगे शामिल

इंदौर। भाजपा ने इंदौर में कांग्रेस को बड़ा झटका देने की तैयारी कर ली है। गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे मुख्यमंत्री मोहन यादव की उपस्थिति में आठ हजार से ज्यादा कांग्रेसी भाजपा में शामिल होंगे। कार्यक्रम विधानसभा क्षेत्र एक स्थित दलाल बाग मैदान पर होगा। कार्यक्रम के संयोजक पूर्व विधायक संजय शुक्ला ने बताया कि कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होने वालों में इंदौर विधासनभा क्षेत्र एक, देपालपुर, बेटमा, गौतमपुरा के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ इंदौर नगर निगम के कई वर्तमान पार्षद, मंडल अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, सेवादल के पदाधिकारी, सरपंच आदि शामिल हैं। मुख्यमंत्री दलाल बाग से कलेक्टर कार्यालय चौराहा पहुंचेंगे। वे वहां भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी के समर्थन में जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री रैली के रूप में कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर लालवानी का नामांकन फार्म जमा कराएंगे।

कई बड़े नामों से चल रही है चर्चा

पूर्व विधायक शुक्ला ने बताया कि दलाल बाग में होने वाले कार्यक्रम में कांग्रेस के कई बड़े नाम भाजपा में शामिल होंगे। पार्षदों के अलावा कई पूर्व पार्षदों, सरपंचों से अंतिम दौर की चर्चा चल रही है। कई बड़े नेता सीधे कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर मुख्यमंत्री के हाथों भाजपा की सदस्यता गृहण करेंगे।

पंचायत भवन के पास होगा कार्यकर्ता एकत्रीकरण

भाजपा के मीडिया प्रभारी रितेश तिवारी और सह प्रभारी नीतिन द्विवेदी ने बताया कि कलेक्टर चौराहा पर होने वाली मुख्यमंत्री की सभा में 10 हजार से ज्यादा कार्यकर्ताओं के शामिल होने की उम्मीद है। कार्यकर्ता एकत्रीकरण पंचायत भवन के पास होगा। कार्यक्रम की सूचना कार्यकर्ताओं को टेलीफोन के माध्यम से दे दी गई है।

जिला न्यायालय की पार्किंग में आंशिक बदलाव, सुबह डेढ़ घंटा आ-जा सकेंगे वकीलों के वाहन

इंदौर। जिला न्यायालय की पार्किंग व्यवस्था में बुधवार से आंशिक बदलाव किया गया है। वकीलों के वाहन सुबह 10 से 11.30 बजे और शाम पांच बजे बाद जिला न्यायालय परिसर में आ-जा सकेंगे। वकीलों को बस्ता और पुस्तकें टेबलों पर रखने के लिए यह सुविधा दी गई है। टेबल और बैठकों पर पुस्तकें और बस्ता रखने के बाद ये वाहन तुरंत पार्किंग में रवाना हो जाएंगे। इसी तरह शाम 5 बजे बाद ये वाहन बस्ता और पुस्तकें लेने के लिए परिसर में आ सकेंगे। जिला न्यायालय परिसर की बदहाल पार्किंग व्यवस्था को सुधारने के उद्देश्य से हाल ही में होप मिल की जमीन पर पार्किंग बनाई गई है। इसके चालू होने के बाद जिला न्यायालय परिसर में वाहनों की आवाजाही पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दी गई थी। वकील इस व्यवस्था में बदलाव की मांग कर रहे थे। इंदौर अभिभाषक संघ के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि अभिभाषकों के वाहनों को परिसर में शर्तों सहित छूट दी गई है। शर्तों का उल्लंघन होने की स्थिति में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश जिला अभिभाषक संघ को अवगत करवाकर तत्काल प्रभाव से दी गई छूट को समाप्त कर सकेंगे। छूट के प्रविधानों के मुताबिक वकीलों के वाहन सुबह 10 से 11.30 बजे तक परिसर में प्रवेश कर सकेंगे। ये वाहन बस्ता, पुस्तकें खाली करने के बाद तुरंत पार्किंग के लिए रवाना हो जाएंगे।

नगर निगम के दस्तावेजों को ऑनलाइन करने की कवायद शुरू

घोटालों से बचने की कोशिश

इंदौर। 28 करोड़ 76 लाख रुपये के फर्जी बिल प्रस्तुत होने और इसमें से तीन करोड़ 20 लाख रुपये का भुगतान होने के बाद नींद से जागा इंदौर नगर निगम अब निविदा की पूरी प्रक्रिया को आनलाइन करने जा रहा है। इसके अलावा निविदाओं के दस्तावेजीकरण भी आनलाइन होगा। इसके अलावा पुरानी निविदाओं और उनके साथ प्रस्तुत दस्तावेजों को भी आनलाइन किया जाएगा। नगर निगम ने इसके लिए आइटी कंपनियों से निविदाएं आमंत्रित की हैं। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने बताया कि दस्तावेजों को आनलाइन करने की प्रक्रिया बहुत जल्द पूरी कर ली जाएगी।

100 करोड़ से ज्यादा का फर्जीवाड़ा होने की आशंका- इधर 28 करोड़ 76 लाख रुपये के फर्जी बिल प्रस्तुत होने के मामले में जांच कर रहे पुलिस अधिकारियों को करीब चार करोड़ रुपये के एक दूसरे फर्जीवाड़े के दस्तावेज हाथ लगे हैं। आशंका जताई जा रही है कि नगर निगम में 100 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान बगैर किसी काम के ठेकेदारों को हो चुका है। मंगलवार को जिस चार करोड़ रुपये के फर्जीवाड़े की जानकारी

पुलिस के हाथ लगी है उसे अंजाम देने वाले ठेकेदार के तार एक कांग्रेसी नेता से जुड़े होने की बात भी पता चली है। चौंकाने वाली बात यह भी है कि 28 करोड़ 76 लाख रुपये के फर्जी बताए जा रहे बिल और दस्तावेजों पर निगम के जिन अधिकारियों के हस्ताक्षर थे उन्हीं के हस्ताक्षर चार करोड़ के नए फर्जीवाड़े में भी दस्तावेजों पर पाए गए हैं। आशंका है कि नगर निगम में बगैर काम के फर्जी बिल प्रस्तुत कर भुगतान प्राप्त करने का खेल करीब दस वर्षों से चल रहा है। इस दौरान 100 करोड़ से ज्यादा का भुगतान कथित ठेकेदारों को हो भी चुका है। नगर निगम की आर्थिक स्थिति को लेकर कई बार सवाल उठते रहे हैं। कई बार नगर निगम के पास कर्मचारियों को वेतन देने तक की व्यवस्था नहीं रहती। इधर दूसरी तरफ कथित ठेकेदार बगैर काम के करोड़ों का भुगतान निगम से ले रहे हैं।

इंदौर में अंगुली पर मतदान का निशान दिखाओ और पोहा-जलेबी, आइस्क्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, नूडल्स फ्री में खाओ

इंदौर। लोकसभा चुनाव में इंदौर को मतदान में नंबर वन बनाया जाएगा। मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिए नवाचार और अनूठी पहल की जा रही है। 13 मई को मतदान करने वालों को पोहे, जलेबी, आइस्क्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, नूडल्स और मंचूरियन फ्री में खिलाए जाएंगे। उन्हें खरीदी पर आकर्षक डिस्काउंट भी दिया जाएगा। यह निर्णय सिटी बस कार्यालय परिसर में मंगलवार को कलेक्टर आशीष सिंह की अध्यक्षता में आयोजित 'मतदाता जागरूकता संवाद' के अंतर्गत शहर के शहर के विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों व संगठनों के पदाधिकारियों ने लिया। मतदाता जागरूकता के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे।

बैठक में नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा, स्मार्ट सिटी के सीईओ दिव्यांक सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सिद्धार्थ जैन सहित अन्य अधिकारी और शहर के विभिन्न मार्केट एसोसिएशन, खाद्य सामग्री एसोसिएशन, कैफे, माल होटल एसोसिएशन आदि संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कलेक्टर सिंह ने कहा कि इंदौर में अधिक से अधिक मतदान हो और इंदौर नंबर वन बने इसके लिए समाज के सभी वर्गों को अपनी महती भूमिका निभाना होगी। कलेक्टर ने उपस्थितजन को मतदान करने और दूसरे को मतदान के लिए प्रेरित करने की शपथ भी दिलाई। इस अवसर पर मतदाताओं को जागरूक करने के लिए व्यवसायिक संस्थाओं द्वारा लिए गए निर्णयों की जानकारी दी गई।

व्यावसायिक संस्थाओं का निर्णय, इंदौर को बनाया जाएगा मतदान में नंबर वन, मतदाता जागरूकता के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे

यहां मिलेगा 10 प्रतिशत का डिस्काउंट

अपना स्वीट्स द्वारा अपने सभी आउटलेट एवं ग्रांड माचल रिसोर्ट में मतदान करके आने वालों को 10 प्रतिशत का आकर्षक डिस्काउंट दिया जाएगा। बैठक में रोहन झांझरिया द्वारा बताया गया कि शहर के चुनिंदा 50-60 मतदान केंद्रों पर मतदाताओं को फ्री नाश्ता एवं कोल्ड ड्रिंक्स दी जाएगी। होटल एसोसिएशन द्वारा भी मतदाताओं को आकर्षक डिस्काउंट दिया जाएगा।

मतदाताओं की सुविधा के लिए होंगे विशेष इंतजाम

कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि इंदौर के मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की सुविधा के लिए छाया, बैठक, पीने के ठंडे पानी, पंखे-कूलर आदि की व्यवस्था की जाएगी। उन्होंने आग्रह किया कि मतदान केंद्रों को और अधिक सुविधा सम्पन्न बनाने के लिए संस्थाएं और संगठन भी अपने स्तर से मदद करें।

छप्पन दुकान पर सुबह 7 से 9 बजे तक फ्री में पोहा-जलेबी

छप्पन दुकान एसोसिएशन द्वारा 13 मई को सुबह 7 से 9 बजे तक मतदान कर आने वाले मतदाताओं को पोहा व जलेबी फ्री में खिलाई जाएगी। ऐसे युवा मतदाता जिन्होंने पहली बार अपने मताधिकार का उपयोग किया है, उन्हें मुक्त आइस्क्रीम खिलाई जाएगी। कृष्णपुरा छत्री रोड बजरंग मंदिर के पास च्वाइस चाइनीज सेन्टर द्वारा मतदान कर आने वाले मतदाताओं को मंचूरियन एवं नूडल्स मुक्त में खिलाए जाएंगे।

इंदौर के कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय बम ने भरा नामांकन, पटवारी बोले-हमारा संघर्ष बड़ी ताकत से

इंदौर । पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि प्रदेश के शराब माफिया से सरकार ने 35 करोड़ रुपये के इलेक्टोरल बांड भाजपा के खाते में डलवाए। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री हैं। वे बेरोजगारी, महंगाई के बजाए मांस, मछली के बारे में बात करते हैं। कांग्रेस उम्मीदवार अक्षय बम ने बुधवार को नामांकन पर्चा निर्वाचन कार्यालय ने जमा किया। रैली से पहले मोतीतबेला चौराहे पर एक सभा हुई। इसमें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि संघर्ष का दौर चल रहा है। संघर्ष एक बडी ताकत से है, जो नियम कायदों को नहीं मानती है। वो ताकत देश में लोकतंत्र खत्म करना चाहती है। यह चुनाव हार-जीत का नहीं, संविधान की रक्षा का है। पटवारी ने कहा कि प्रदेश के शराब माफिया से सरकार ने 35 करोड़ रुपये के इलेक्टोरल बांड भाजपा के खाते में डलवाए।

उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री हैं। वे बेरोजगारी, महंगाई के बजाए मांस, मछली के बारे में बात करते हैं। पटवारी ने कहा कि सूरत में जनता को वोट डालने का अधिकार छीन लिया। वहां भाजपा का उम्मीदवार निर्विरोध जीत रहा है। भाजपा इसी तरह तानाशाही से देश चलाना चाहती है। कांग्रेस नेता विवेक तनखा ने कहा कि तीन माह से कांग्रेस की लड़ाई कोर्ट में लड़ रहा हूं। आयकर विभाग ने कांग्रेस के खाते बंद कर दिए। 135 करोड़ खाते में से निकाल लिए गए। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट को निर्देश देना पड़ा। मुख्यमंत्री जेल भेजे जा रहे हैं। देश में अघोषित आपातकाल खत्म होना चाहिए। कांग्रेस उम्मीदवार अक्षय बम ने कहा कि इंदौर आईआईटी, आईआईएम और कैट के लिए जाना जाता है। यह कांग्रेस की देन है। भाजपा के सांसद शंकर लालवानी निष्क्रिय साबित हुए। उनके कार्यकाल में इंदौर को कोई सौगात नहीं मिली। सभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि इंदौर स्वच्छता में नम्बर वन है, लेकिन अब भाजपा नगर निगम उसमें भी घोटाले कर रही है। 28 करोड़ का ड्रेनेज घोटाला सामने आया है। निगम घोटाले में भी नम्बर वन बनना चाहता है। महिला कांग्रेस अध्यक्ष सोनाली मिमरोट ने कहा कि आजादी के बाद कांग्रेस ने भारत को लोकतांत्रिक देश दिया था, लेकिन भाजपा लोकतंत्र खत्म करना चाहती है।

सात के फेर में पसीना-पसीना हो रहे भाजपाई

इंदौर। मध्य प्रदेश में आम चुनाव को एक पक्षीय बता रहे भाजपाई पहले चरण में हुए कम मतदान के बाद पसीना-पसीना हो रहे हैं। विभिन्न लोकसभा क्षेत्रों में बीते चुनाव की तुलना में करीब सात प्रतिशत तक कम मतदान ने क्षेत्र के बड़े भाजपा नेताओं के माथे पर पसीना ला दिया है। कहां तो मतदान प्रतिशत बढ़ाकर जीत के अंतर को बढ़ाने की कवायद में हफ्तों से भाजपाई जुटे थे और कहां मतदान प्रतिशत बढ़ने के बजाय कम हो गया। प्रदेश में सबसे ज्यादा चिंता में इस समय मालवा-निमाड़ के नेता हैं। दरअसल, यहां की आठ लोकसभा सीटों के लिए चौथे चरण में 13 मई को मतदान होना है। उस समय गर्मी तो चरम पर होगी ही, मतदान तिथि के आसपास अक्षय तृतीया जैसे मंगल विवाह मुहूर्त भी हैं। ऐन चुनाव के वक्त इस स्थिति से पार कैसे पाया जाए, यही बात इस समय नेताओं के बीच चर्चा के केंद्र में है।

संपादकीय

सूरत-भाजपा की 'अनैतिक' जीत

गुजरात के सूरत में भाजपा प्रत्याशी नीलेश कुंभाणी का निर्विरोध जीतना महज एक संयोग अथवा अपवाद नहीं है बल्कि यह एक सुनियोजित साजिश का नतीजा है। यूं चुनाव में कतिपय सीटों पर विरोधी प्रत्याशियों का नामांकन पत्र रद्द होने, तकनीकी खामियां होने अथवा पार्टी का अधिकृत चुनाव चिन्ह न मिलने के कारण चुनाव एक तरफा हो जाने के उदाहरण पहले से हैं। लेकिन यह सब जल्दबाजी अथवा असावधानी के कारण ज्यादा होता है। सूरत में जो हुआ, उसकी अंतकथा सामने आने के बाद यह साफ हो गया है कि यह योजनाबद्ध तरीके से घटित कराया गया था। विपक्षी कांग्रेस ने इसे देश में लोकतंत्र खतरे में होना बताया है। यह आशंका इसलिए सही है कि सूरत तो बस एक शुरुआत है। गौरतलब है कि सूरत लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी नीलेश कुंभाणी का नामांकन पत्र खारिज होने के बाद सोमवार को निर्वाचन अधिकारी ने भाजपा प्रत्याशी मुकेश दलाल को निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया था। बाद में खुलासा हुआ कि सूरत में भाजपा की निर्विरोध जीत के लिए कांग्रेस प्रत्याशी नीलेश कुंभाणी ने ही भाजपा से हाथ मिला लिया था। बताया जाता है कि इसकी स्क्रिप्ट भाजपा की ओर से कुंभाणी को मिली थी। उसी के अनुसार कुंभाणी ने कांग्रेस की प्रदेश इकाई को अंधेरे में रखते हुए अपने पैंतरे चले थे। एक साजिश के तहत कुंभाणी ने अपने नामांकन पत्र के प्रस्तावकों में कांग्रेस कार्यकर्ता-कैडर मेंबर की बजाय रिश्तेदार और करीबियों को रखा। कुंभाणी ने अपने पर्चे में प्रस्तावक बहनोई जगदीश सावलिया, बिजनेस पार्टनर ध्रुविन धामेलिया और रमेश पोलरा को बनाया। नीलेश ने कांग्रेस पार्टी के डमी प्रत्याशी सुरेश पडसाला का प्रस्तावक भी अपने भांजे भौतिक कोलडीया को बनवाया। पर्चा दाखिल करते वक्त भी कुंभाणी किसी भी प्रस्तावक को चुनाव अधिकारी के सामने नहीं ले गए। बाद में चारों प्रस्तावकों ने उनके हस्ताक्षर फर्जी होने का शपथपत्र दे दिया और खुद अंडर ग्राउंड हो गए। इसके बाद सभी को कारण बताओ नोटिस जारी करने की प्रक्रिया अपनाई गई। लेकिन कोई भी सामने नहीं आया। इसके बाद कुंभाणी और डमी प्रत्याशी सुरेश पडसाला का पर्चा खारिज हो गया। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार सूरत में भाजपा के इस 'ऑपरेशन निर्विरोध' का एपिसेंटर, फाइव स्टार होटल ली-मैरिडियन बना था। ये सारी कवायद भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल की सीधी निगरानी में हुई। खेल यहीं नहीं थमा। कुंभाणी का पर्चा खारिज होने के बाद भी सूरत से बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के टिकट पर प्यारेलाल भारती सहित छोटे दलों के 4 प्रत्याशी मैदान में थे। बसपा प्रत्याशी भी सूरत से वडोदरा पहुंच कर एक फॉर्म हाउस में जा बैठा। बसपा प्रत्याशी प्यारेलाल से संपर्क न होने पर क्राइम ब्रांच जुटी। लोकेशन के आधार पर कार्रवाई हुई। इसके बाद प्यारेलाल सूरत लौटते ही होटल ली-मैरिडियन पहुंचे। भाजपा ने साम-दाम दंड भेद की नीति अपनाई। इसी तर्ज पर सरदार वल्लभभाई पटेल पार्टी, ग्लोबल रिपब्लिकन पार्टी और लोग पार्टी सहित सभी 4 दलों के प्रत्याशियों ने अंतिम दिन सोमवार को नामांकन पत्र वापस लेकर भाजपा का रास्ता साफ कर दिया। इसके बाद निर्दलीय प्रत्याशी भी नाम वापसी के लिए तैयार हो गए। मैदान में अकेले भाजपा के मोहन दलाल बचे और उन्हें निर्वाचित घोषित कर दिया गया। सूरत में 7 मई को मतदान होना था। इस तरह नाम वापसी बिना किसी लेन देन अथवा प्रलोभन के हुई होगी, इस पर विश्वास करना कठिन है। कांग्रेस की गलती यह है कि उसके पास अब भरोसा करने लायक प्रत्याशी भी नहीं बचे हैं। जहां तक भाजपा का सवाल है तो भले ही उसने यह सीट साम दाम दंड भेद से जीत ली गई हो, लेकिन यह जीत अनैतिक है।

दक्षिण से 'मेक-अप' के फेर में बीजेपी

नजरिया

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कोशिश में कोई कोर कसर नहीं है। काडर में उत्साह है। साधन प्रचुर हैं। प्रचार आक्रामक है और गंतव्य भी साफ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दौरे का कोई मौका नहीं छोड़ते। तीर्थो-देवालयों में दर्शन-अनुष्ठान का क्रम जारी है। लगातार सभाएं और रोड शो। अमित शाह भी पीछे नहीं हैं। दक्षिण की गैर-भाजपा सरकारों और मुख्यमंत्रियों पर आरोपों-आक्षेपों की बौछार। भ्रष्टाचार और राजकाज को लेकर तोहमतें। लानत-मलामत। गारंटियों की दुहाई। कह सकते हैं कि तस्वीर बनाने की पुरजोर कोशिश, मगर तस्वीर है कि बनती नहीं। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और सत्ता के द्रविड़ मॉडल के पैरोकार मुथुवेलु करुणानिधि स्तालिन चुटकी लेते हैं कि बीजेपी उत्तर भारत के घाटे की भरपाई दक्षिण भारत से करना चाहती है, तो तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी नजूमी के अंदाज में कहते हैं कि दक्षिण भारत में बीजेपी को कुल जमा दसेक सीटें मिलेंगी। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार भी कहते हैं कि दक्षिण भारत में बीजेपी की दाल नहीं गलेगी।

एमके स्तालिन, डीके शिवकुमार और रेवंत रेड्डी आज दक्षिण भारत की राजनीति के चमकीले सितारे हैं। दुर्भाग्य से भाजपा के पास इन सितारों का कोई तोड़ नहीं है। येदियुरप्पा बूढ़े और निष्प्रभ हो चले हैं। केरल में मेट्रो-मैन श्रीधर विफल रहे। आंध्र में कांग्रेस की कमान अब शर्मिला जैसी तेज तर्रार नेत्री के हाथों में है। बीजेपी को वहां बाबू (चंद्रबाबू नायडू) और पवन-कल्याण का आसरा है। कर्नाटक का सिंहद्वार वह गंवा चुकी है। केरल में राजनीति एलडीएफ और यूडीएफ के मध्य ध्रुवीकृत थी, ध्रुवीकृत है। पुदुच्चेरि की इकलौती सीट पर वैथिलिंगम जैसा सशक्त और मंजा हुआ खिलाड़ी किला लड़ा रहा है। कमल हासन जैसे कलाकार ने भगवा-साम्राज्य के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोला है। अन्नामलाई और सौन्दर्यराजन के क्रमशः कोयंबटूर और चेन्नै दक्षिण में चुनावी रण में होने से उन पर सबकी निगाहें हैं, लेकिन बात इतने से नहीं बनती।

डेक्कन यानि दक्षिण भारत। दक्षिण भारत यानि तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना। छठवां राज्य पुदुच्चेरि। पुदुच्चेरि- तमिलनाडु में 40, कर्नाटक में 28, आंध्र में 25, केरल में 20 और तेलंगाना में 17। कुल योग 130। दो सौ बहत्तर के जादुई अंक के मान से ये एक सौ तीस सीटें मायने रखती हैं। जब रेवंत रेड्डी बारह-पंद्रह सीटों की बात करते हैं तो साफ है कि वह डेक्कन में बीजेपी के 10 फीसद के भंवर में अटक जाने की बात करते हैं। बाकी को छोड़ें और कुछ देर को सिर्फ कर्नाटक की बात करें तो काबिलेगौर तस्वीर उभरती है। कर्नाटक में लोकसभा की 28 सीटें हैं। बीजेपी ने यहां आहिस्ता-आहिस्ता सेंध लगाई और बखूबी पांव पसारे। सन् 2004 में उसे 18 सीटें मिलीं, सन् 2009 में 19 और सन् 2014 की मोदी लहर में 17। पिछले चुनाव में तो कमाल हो गया। कर्नाटक इस कदर भगवा रंग में रंगा कि वहां से बीजेपी के 25 सांसद निर्वाचित हुए। उसके समर्थन से एक और सांसद निर्वाचित हुआ और जद (स) तथा कांग्रेस सिर्फ एक-एक जीत से खाता खोल सकी।

इस परिदृश्य में बीजेपी के माथे पर सलें स्वाभाविक हैं। कहां तो अकेले कर्नाटक से 25 सीटें और कहां एक सौ तीस में से अधिकतम 15 सीटों की पेशीनगोई! कर्नाटक में सन् 2019 के बाद बीते पांच वर्षों में कृष्णा, कावेरी और तुंगभद्रा में काफी पानी बह गया है और बीजेपी की जीती अधिकांश सीटों पर पेंच फंसा है। जनता दल (एस) का शीराजा इस कदर बिखरा है कि जनता दल (एस) के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री कुमारस्वामी के लिए अपनी मंड्या सीट बचाना मुश्किल हो रहा है। सुश्री सुमलता अंबरीष के बीजेपी में शरीक होने के बाद उनके मंड्या से लड़ने का मंडराता खतरा तो दूर हो गया लेकिन पिता और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के पतवार संभालने के बाद भी कुमारस्वामी की नौका भंवर में फंसी हुई है। देवगौड़ा ने मैसूर में मोदी के साथ मंच शेयर कर सिद्धरामैया-शिवकुमार पर खूब आरोप जड़े। उन्हें जातीय समीकरण और मोदी मैजिक का भरोसा है, लेकिन कर्नाटक में जातीय समीकरण दरक गया है। बीजेपी की दिक्कत यह है कि बड़ी संख्या में लिंगायत उससे रुष्ट हैं। बीजेपी को धारवाड़ से प्रह्लाद जोशी को टिकट देना महंगा पड़ा है। वीरशैव लिंगायतों के धर्मगुरु उनके विरोध में हैं। सिरहट्टी फकीरेश्वर मठ के दिंगलेश्वर स्वामी की अगुवाई में हुबली में हुई बैठक में जोशी के विरोध का फैसला लिया गया। इसमें शक नहीं कि घटनाक्रम के फलस्वरूप वोक्कलिगा और लिंगायत दोनों प्रमुख समुदाय बीजेपी से छिटके हैं। वीरशैव लिंगायत संप्रदाय की धारणा है कि बीजेपी ने उसके नेताओं का करियर चौपट किया है। कुरुबाओं और लिंगायतों की उपेक्षा कर ब्राह्मणों को प्रश्रय और उपकृत किया गया है। सन् 2019 में वोक्कलिगा कुमारस्वामी की सरकार गिराने की तोहमत भी बीजेपी के माथे है। वोक्कलिगाओं का पुराने मैसूर में खासा दबदबा है। बीजेपी इससे वाकिफ है। यही कारण है कि 10 अप्रैल को 14 प्रत्याशी जाकर निर्मलानंद स्वामी से मिले। कभी वोक्कलिगा बिरादरी जद (एस) से जुड़ी हुई थी, किंतु अब वो बात नहीं रही। डीके शिवकुमार के परिदृश्य में उभरने के बाद वोक्कलिगा कांग्रेस की ओर मुड़े हैं। वजह यह कि शिवकुमार स्वयं वोक्कलिगा हैं। उधर लिंगायतों को शिकायत है कि कर्नाटक से बीजेपी के 25 सांसदों में से नौ वीरशैव लिंगायत थे, लेकिन किसी को भी काबीना मंत्री के ओहदे से नवाजा नहीं गया, जबकि दो फीसद ब्राह्मणों को तरजीह देकर दो काबीना मंत्री बनाये गये। कह सकते हैं कि प्रह्लाद जोशी की चुनाव मैदान में मौजूदगी भाजपा को उसी तरह भारी पड़ रही है, जिस तरह गुजरात में रूपाला की। रूपाला और जोशी दोनों ही बीजेपी के शिखर नेतृत्व की पसंद हैं। बीजेपी के संकटों का यहीं अंत नहीं। शिवमोगा में केएस ईश्वरप्पा क्षुब्ध हैं। दिल्ली में उनकी अमित शाह से भेंट से बात बनी नहीं। उधर मैसूरू-कोडागू अथवा बेंगलुरू उत्तर से टिकट की आकांक्षिणी भाजपा विधायक सुश्री तेजस्विनी गौड़ा ने खफगी के चलते पार्टी से इस्तिफा दे दिया।

इसमें शक नहीं कि कर्नाटक में बीजेपी फिसलपट्टी पर है। करीब डेढ़ दशक से राज्य की 13 सीटों बेंगलुरू उत्तर, दक्षिण और मध्य, बगलकोट, बेलगावी, धारवाड़, विजयपुरा, हवेरी, दावणगेरे, शिवमोगा, उत्तर और दक्षिण कन्नड़ा और कोप्पल पर उसका वर्चस्व कायम है। अब यह एकाधिकार खंडित होने की ओर अग्रसर है। कांग्रेस सन् 1999 से दयनीय दशा में है। वह किसी भी सीट पर मुसलसल नहीं जीती। यहां तक कि नौ बार एमएलए और दो बार एमपी रहे मल्लिकार्जुन खड़गे भी जून 2019 में कलबुर्गी से बीजेपी के उमेश जाधव से हार गये थे।

खड़गे को अम्मीद है कि इस बार उनके दामाद राधाकृष्ण डोड्डमणि उनकी हार का बदला लेंगे। कर्नाटक की भांति आंध्र और तेलंगाना में भी परिदृश्य बदला हुआ है। आंध्र में समीकरण उलझे हुए हैं। बीजेपी तीन दलों के गठबंधन में शरीक है। तेलंगाना में वह पुनरावृत्ति की स्थिति में नहीं है। गत बार वह चार सीटों पर जीती थी। तमिलनाडु और केरल उसकी दुखती रग कल भी थे और आज भी हैं। वहां गठबंधनों की दो पाटों की राजनीति कायम है। पुदुच्चेरि में कांग्रेस की टिकट पर सन् 2019 में करीब दो लाख वोट से जीते वैथिलिंगम फिर से मैदान में हैं। बीजेपी ने इस इकलौती सीट पर कांग्रेस से आये ए. नमस्शिवायम पर दांव लगाया है। लगभग 10 लाख मतदाताओं की पुदुच्चेरि में नमस्शिवायम की वन्नियारों में अच्छी पैठ है। सीएम रंगासामी उनके लिए सचेष्ट हैं। यहां अन्नाद्रमुक ने मछेरों की बिरादरी के जी. तमिषवेंधन और नाम तमिलारकच्ची ने सुश्री आर. मेनका को मैदान में उतारकर मुकाबले को रोचक रोमांचक बना दिया है। पुदुच्चेरि में कांग्रेस ने गत 14 चुनावों में 10 बार जीत दर्ज की है। किसना कोताह यह कि दक्षिण भारत में परिदृश्य उलझा हुआ है। स्तालिन कहते हैं कि मोदी ने पूरे देश को क्षति पहुंचाई है। उनका गुजरात मॉडल धोखा है। बीजेपी उत्तर के घाटे की पूर्ति दक्षिण भारत से करना चाहती है, किंतु डेक्कन से उसका 'मेक-अप' का अभियान पूरा नहीं होगा और जनता बिना बीजेपी का भारत रचेगी।

विश्व मंच

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

जंग अब विश्व में नहीं, हथियारों में लगे

शांति के तमाम उपायों के बीच दुनियाभर में सैन्य खर्च, शस्त्रीकरण एवं घातक हथियारों की होड़ किसी खतरे की घंटी से कम नहीं। शस्त्रीकरण के भयावह दुष्परिणामाओं से समूचा विश्व भयाक्रांत है, हर पल आणविक हथियारों के प्रयोग को लेकर दुनिया डर के साये में जी रही है। इसीलिये आज अयुद्ध, निशस्त्रीकरण एवं शांति की आवाज चारों ओर से उठ रही है। शक्ति संतुलन के लिये शस्त्र-निर्माण एवं शस्त्र संग्रह की बात से किसी भी परिस्थिति में सहमत नहीं हुआ जा सकता। क्योंकि इससे अपव्यय हो होता ही है, साथ ही किसी भी गलत हाथों से दुरुपयोग होने की बहुत संभावनाएं रहती है। ताजा घटनाक्रम को देखें तो एक ओर रूस और यूक्रेन आमने-सामने हैं, वहीं दूसरी तरफ इजरायल और ईरान के बीच तल्खी भी चरम पर है। चीन और ताइवान के बीच भी रह-रह कर युद्ध के बदल मंडरा रहे हैं। ऐसे माहौल में यह सवाल भी गूंजना स्वाभाविक है कि क्या सचमुच दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ते हुए घातक हथियारों के उपयोग की प्रयोगभूमि बन रही है? सवाल दूसरे ओर भी हैं। स्टॉकहोम इन्टरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की हथियारों पर आयी ताजा रिपोर्ट ऐसे ही सवाल खड़े कर रही है। इसका संतोषजनक जवाब शायद ही मिले क्योंकि दुनिया सीधे-सीधे दो खेमों में बंट गई है।

स्टॉकहोम की रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले ही नहीं, डराने वाले हैं। शांति के तमाम उपायों के बीच दुनियाभर में सैन्य खर्च का बढ़ना एवं नये-नये हथियारों का बाजार गरम होना, चिन्ताजनक है। रिपोर्ट में खास बात यह है कि दुनिया में सर्वाधिक सैन्य खर्च करने वाले देशों में भारत चौथे नंबर पर बरकरार है। शांति एवं अहिंसा की भूमि पर हथियारों का जमावड़ा उसकी कथनी एवं करनी के भेद को उजागर कर रहा है। ये सवाल स्वाभाविक है कि जब प्रत्येक देश शाांति बनाए रखने की वकालत करता है फिर हथियारों की होड़ लगातार क्यों बढ़ रही है? भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बन चुका है। स्टॉकहोम की ओर से जारी रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है। भारत ने बीते पांच साल में दुनिया में सबसे ज्यादा हथियार खरीदे हैं। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि यूरोप का हथियार आयात 2014-18 की तुलना में 2019-23 में लगभग दोगुना बढ़ा है, जिसके पीछे रूस-यूक्रेन युद्ध बड़ा कारण माना जा रहा है। वहीं, इसके अलावा पिछले पांच वर्षों में सबसे ज्यादा हथियार एशियाई देशों ने खरीदे हैं। इस लिस्ट में रूस-यूक्रेन का युद्ध देश के रक्षा निर्यात को काफी प्रभावित किया है। इस कारण से पहली बार रूस हथियार निर्यात में तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। तो वहीं, अमेरिका पहले और फ्रांस दूसरे नंबर पर है।

पिछले 25 सालों में पहली बार, संयुक्त राज्य अमेरिका एशिया और ओशिनिया का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता रहा। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही इन हथियारों एवं हिंसक मानसिकता का शिकार है। अमेरिका दुनिया पर आधिपत्य स्थापित करने एवं अपने शस्त्र कारोबार को पनपाने के लिये जिस अपसंस्कृति को उसने दुनिया में फैलाया है, उससे पूरी मानवता कराह रही है, पीड़ित है। अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था (न्यू वर्ल्ड आर्डर) की बात की है, खुलेपन की बात की है लगता है 'विश्वमानव' का दम घुट रहा है और घुटन से बाहर आना चाहता है। विडम्बना देखिये कि अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहां की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं हैं। ऐसे कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्तरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोग मारे गए। 2014 में अमेरिका में हत्या के कुल दर्ज करीब सवा चौदह हजार मामलों में अड़सठ फीसद में बंदूकों का इस्तेमाल किया गया था।

एक तरफ अमरीका और उसके सहयोगी नाटो देश हैं तो दूसरी तरफ रूस-चीन का गठजोड़ है। तटस्थ रहने वाले देश भी गाहे-बगाहे अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी खेमे की तरफ झुकाव प्रदर्शित करते रहे हैं। ऐसे में आखिरी उम्मीद संयुक्त राष्ट्र ही रह जाता है। जबकि संयुक्त राष्ट्र की शक्तियां एवं उद्देश्य कोरे दिखावे के हैं, समूची दुनिया इससे वाकिफ है। वह ऐसे किसी भी संकट में शांति प्रस्ताव पारित कर अपनी जिम्मेदारियों से इतिश्री कर पला झाड़ लेता है। वह न तो रूस-यूक्रेन के संघर्ष में और न ही इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष रोकने में कोई सार्थक भूमिका अदा कर पा रहा है। उसके कड़े से कड़े फैसले भी आखिर में महाशक्तियों के वीटो के सामने हथियार डाल देते हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अस्तित्व में आया संयुक्त राष्ट्र कहने को तो दुनिया के देशों का सबसे बड़ा मंच है पर युद्धों को रोकने में उसकी भूमिका नगण्य है। ऐसे में दुनिया में बढ़ते हथियारों की होड़ एवं युद्ध की संभावनाओं को आखिर कौन-कैसे-किसको रोके? जाहिर है, ऐसी परिस्थितियों में तो हथियारों की होड़ बढ़ेगी ही। अमरीका एक तरफ युद्ध की तरफ बढ़ रहे देशों से शांति की अपील करने में सबसे आगे रहता है। लेकिन दूसरी तरफ अमरीकी हथियार कंपनियां तमाम देशों को खरबों रुपए के हथियार बेच रही हैं। इन कंपनियों के लिए तो युद्धकाल ही स्वर्णकाल होता है। ऐसे दौर में जब अधिकांश देश शिक्षा, रोजगार व सेहत के मोर्चे पर संकटों का सामना कर रहे हैं, हथियारों की इस होड़ को रोका ही जाना चाहिए।

रूस एवं यूक्रेन के बीच लम्बे समय से चल रहा युद्ध भीषणतम तबाही एवं सर्वनाश का कारण बनता दिख रहा है। रूस द्वारा परमाणु हथियारों के इस्तेमाल किये जाने एवं यूक्रेन के द्वारा 'डर्टी बम' का इस्तेमाल किये जाने की धमकियां, दुनिया के लिये डर का कारण बन रही है। भयंकर विनाश की आशंकाओं के बीच समूची दुनिया सहमी हुई है। यदि परमाणु हथियारों का उपयोग होता है तो यह मानवता के मूलभूत सिद्धांतों के खिलाफ होगा एवं दुनिया को अशांति की ओर अग्रसर करने वाला होगा। अब परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का खतरा इसलिए बढ़ गया है कि यूक्रेन को इतने लंबे समय से झुकता न देख रूस का अहं चोट खा रहा है। हालांकि परमाणु हथियारों के दुष्परिणामों से दोनों देश अनजान नहीं हैं। इस युद्ध को चलते लंबा वक्त हो गया। इस तरह युद्धरत बने रहना खुद में एक असाधारण और अति-संवेदनशील मामला है, जो समूची दुनिया को विनाश एवं विध्वंस की ओर धकेलने जैसा है। ऐसे युद्ध का होना विजेता एवं विजित दोनों ही राष्ट्रों को सदियों तक पीछे धकेल देगा, इससे भौतिक हानि के अतिरिक्त मानवता के अपाहिज और विकलांग होने का भी बड़ा कारण बनेगा।

यूक्रेन और रूस में शांति का उजाला करने, अभय का वातावरण, शुभ की कामना और मंगल का फैलाव करने के लिये भारत ने लगातार शांति प्रयास किये हैं। लेकिन प्रश्न है कि दुनिया को अहिंसा, अयुद्ध एवं शांति का संदेश देने वाला भारत क्यों हथियारों की दौड़ में शामिल है? मनुष्य के भयभीत मन को युद्ध एवं हथियारों की विभीषिका से मुक्ति दिलाना आवश्यक है। युद्धरत देशों में शांति स्थापित कर, उन्हें अभय बनाकर, युद्ध-विराम करके विश्व को निर्भय बनाना चाहिए। निश्चय ही यह किसी एक देश या दूसरे देश की जीत नहीं बल्कि समूची मानव-जाति की जीत होगी। यथार्थ यह है कि अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, पर अंधापन मृत्यु-विनाश की ओर। लेकिन रूस ने अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का अहसास एक गलत समय पर गलत उद्देश्य के लिये कराया है। इस युद्ध से होने वाली तबाही रूस-यूक्रेन की नहीं, बल्कि समूची दुनिया की तबाही होगी, क्योंकि रूस परमाणु विस्फोट करने को विवश होगा, जो दुनिया की बड़ी चिन्ता का सबब है। बड़े शक्तिसम्पन्न राष्ट्रों को इस युद्ध को विराम देने के प्रयास करने चाहिए। लेकिन प्रश्न है कि जो देश हथियारों के निर्माता है, वे क्यों चाहेंगे कि युद्ध विराम हो। जब तक शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की शस्त्रों के निर्माण एवं निर्यात की भूख शांत नहीं होती तब तक युद्ध की संभावनाएं मैदानों में, समुद्रों में, आकाश में तैरती रहेगी, इसलिये आवश्यकता इस बात की भी है कि जंग अब विश्व में नहीं, हथियारों में लगे।

मत प्रतिशत बढ़ाने की बाध्यता कितनी जरूरी?

चुनाव 2024

गौरव अवस्थी

पहले चरण के चुनाव में कम मतदान को लेकर मीडिया में कई तरह की रिपोर्ट्स और विश्लेषण पढ़ने-सुनने को मिल रहे हैं। कुछ में कम वोटिंग को लेकर चिंता जताई जा रही है और कुछ विश्लेषण में सत्ता पक्ष के सामने आने वाली मुश्किलों को बढ़ा चढ़ा कर पेश किया जा रहा है। चर्चा के बजाय जिस बिंदु पर ध्यान अधिक जाना चाहिए उस तरफ न पार्टियों का ध्यान जा रहा है और न जिम्मेदार संस्था चुनाव आयोग का। असली बहस जिस मुद्दे पर होनी चाहिए वह मीडिया, पार्टी से लेकर सत्ता तक सिरे से गायब है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कम मतदान के लिए गर्मी, सहालग और कटाई के कारण गिनाए गए। यह चिंताएं सतह पर होने वाली हलचल की तरह ही हैं। गर्मी और कटाई के कारण फिजूल हैं क्योंकि पिछले चुनाव भी इसी मौसम में हुए थे।

माना जा सकता है कि कम मतदान के लिए मतदाताओं की उदासीनता ही इसके लिए जिम्मेदार है लेकिन सोचना यह भी होगा कि आखिर लोकतंत्र का भविष्य विधाता अपने इस कर्तव्य से च्युत क्यों रहता है? इसके पीछे नेताओं की गिरती विश्वसनीयता तो नहीं! फिर भी पहले मतदान शब्द की व्याख्या। यह मत+दान संधि से बना हुआ शब्द है। हिंदू धर्म में दान ऐच्छिक माना गया है। साफ है कि मतदान शब्द को अंगीकार करते समय ही स्वीकार कर लिया गया कि मतदान ऐच्छिक है न कि अनिवार्य। जब मत देना अनिवार्य किया ही नहीं गया तो कैसे किसी मतदाता को कम मतदान के लिए जिम्मेदार माना जा सकता है। सबके अपने-अपने तर्क हैं और अपनी-अपनी मजबूरियां। अपने यहां मताधिकार को भी इस तरह प्रचारित किया गया, जैसे लोकतंत्र की चाबी हमने वयस्क लोगों को पकड़ा दी। वास्तव में है भी लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि वयस्कों में मत के प्रति कर्तव्य की भावना भरने की सच्ची कोशिश से परहेज ही रहा। तंत्र कोई भी हो अपना अधिकार पाना कौन नहीं चाहता लेकिन कम लोग ही होते हैं जो अधिकार को कर्तव्य मानकर आगे बढ़ते हैं। अधिकार का इस्तेमाल सिर्फ अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी होता है। फिर देश से बड़ा तो कोई है ही नहीं। धर्म न वर्ग और न जाति-संप्रदाय। मत को कर्तव्य से जोड़ने की महत्वपूर्ण बात अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने जिस गंभीरता के साथ उठाई है, उसके लिए उनके प्रति हम सबको धन्यवाद अदा करना चाहिए। उनकी यह अपील भी महत्वपूर्ण है कि 5 साल में 5 मिनट देश के लिए जरूर निकालें। सोचिए, जिस देश में 35-40 प्रतिशत लोगों के पास देश के लिए 5 मिनट नहीं है, वह क्या केवल अपील से अपने मताधिकार का उपयोग करने लगेंगे। इतनी आसानी से अपने इस कर्तव्य का जिम्मेदारी से निर्वहन करने लगेंगे?

घर में कर्तव्य मां ही सिखाती है। लोकतंत्र में सरकार ही मां की भूमिका में होती है। सरकार की ही जिम्मेदारी है कि वह अपने देश के वयस्क लोगों को मत देने के लिए जागरूक करे। 75 साल बाद भी अगर हम अपने वयस्क नागरिक को मत का महत्व नहीं समझा पाए हैं तो मेरी नजर में अब एक ही रास्ता बचता है वोट न देने वाले को वोटिंग के लिए बाध्य किया जाए। इसका एक ही रास्ता है-नियम और कानून। सत्ता के लिए राजनीति करने वाले दलों और उनके नेताओं से ऐसे किसी नियम कानून की उम्मीद तो बेमानी ही है। अब इसका रास्ता भी कानून की चौखट से होकर ही आ सकता है।यह बात हम पहले भी लिख चुके हैं कि 75 साल के लोकतंत्र में हमने हर क्षेत्र में कई कई गुना तरक्की की है लेकिन मतदान के प्रतिशत में अब तक केवल 22 फ़ीसदी का ही अधिकतम इजाफा हो पाया है। वह भी चुनाव-दर-चुनाव घटता-बढ़ता रहता है। जैसा इसी आम चुनाव के पहले चरण में ही सामने आया। मतदान की इस धीमी प्रगति पर न अब तक किसी का ध्यान गया है और न आज जा रहा है। दुनिया के कई छोटे-छोटे देशों में 95त्न तक मतदान होते हैं। कुछ देशों में वोट का इस्तेमाल न करने वाले वोटरों पर प्रतीकात्मक जुर्माने का भी प्रावधान है। अगर वोट न देने की मतदाता की बात तर्कसंगत होती है तो जुर्माने से छूट भी मिल जाती है। बात कुछ तल्ख जरूर है लेकिन मतदाता जब अपनी मनपसंद का प्रतिनिधि चुनने का अधिकार पाकर खुश हो सकते हैं तो बाध्यता पर नाराज क्यों होंगे? आप सहमत हों या ना हों स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अब यह जरूरी लगने लगा है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

दद्दू की जेनरिक-पोलटिक्स

इधर हमारे एरिया में एक दद्दू बड़े पापुलर हैं। प्यार से लोग इन्हें खरबुज्जा दद्दू कहते हैं। आप सोच रहे होंगे मीठे होंगे, मीठा बोलते होंगे। हमसे या किसी से भी चुपके से पूछेंगे तो उत्तर होगा नहीं। लेकिन डाइरेक्ट उनसे पूछेंगे तो वे कहेंगे हाँ। गजब का कान्फ़िडेन्स है उनमें। सच बोलने में लोगों की जुबान लड़खड़ा सकती है लेकिन दद्दू का झूठ सच का बाप होता है। उनका कहना है कि सच तो अप्पू-टप्पू, दिन-हीन, कमजोर आदमी बोल लेता है, लेकिन झूठ के लिए सवा छप्पन इंच का सीना लगता है। लोकतंत्र में एक अकेला झूठ सैकड़ों सच पर भारी होता है। कृष्ण बिहारी नूर ने लिखा है- 'सच घटे या बढ़े तो सच ना रहे; झूठ की कोई इंतिहा ही नहीं'। खरबुज्जा दद्दू भी यही कहते हैं, झूठ की पतंग सातवें आसमान तक उड़ाई जा सकती है। उड़ाने वाला होना चाहिए। वे मानते हैं हमारा मोहल्ला टोला ही नहीं पूरा संसार मिथ्या-मलाई है। इधर जलवा है का, झूठ से सदियाँ फलती फूलती आ रही हैं, सच के भरोसे एक दिन निकल जाए किसीका तो बताओ। अब आप समझ गए होंगे कि हमारे दद्दू विद्वान टाईप भी है। सही बता दें? असल में दद्दू राजनीति का कीड़ा हैं, वो भी पेस्टिसाईड प्रूफ। हम उनके खास हैं, ऐसा हम मानते हैं और अब हमारी नालायकियत देख कर वो भी मान रहे हैं। हम अभी सीख रहे हैं राजनीति का पंचतंत्र। इन दिनों वे झूठ बोलने की कला सिखा रहे हैं। उनका कहना है कि झूठ हमेशा खम ठोक कर बोलना चाहिए। जो बढ़िया झूठ बोलेगा, जो बार बार झूठ बोलेगा, जो हर बार नया झूठ बोलेगा, जो किसम किसम का झूठ बोलेगा, जो दमदार झूठ बोलेगा, जो दावेदार झूठ बोलेगा, अपने हों या पराए एक जैसा झूठ बोलेगा, जब भी मुँह खोलेगा झूठ ही बोलेगा, झूठ को सच की तरह बोलेगा और सच को कभी भी सच नहीं मानेगा, वही लोकतंत्र का सच्चा रक्षक होगा। दद्दू कहते हैं उनकी यह बात बेजोड़ है। अगर कोई आदमी ढंग से झूठ भी न बोल सके तो एक दुकान तक नहीं चला सकता है देश क्या चलाएगा। संविधान में भले ही लिखा हो 'सत्यमेव जयते' लेकिन असल राजनीति संविधान से परे होती है। जो संविधान ले कर राजनीति में कूदते हैं उन्हें जीवन भर सूखी-सेवा ही करना पड़ती है। राष्ट्रीय चिन्ह देखा होगा, वही चार शेर वाला। शेरों के पैरों के नीचे लिखा है 'सत्यमेव जयते'। यह इतना चुभता है कि चारों शेरों की चीख निकल रही है। महाभारत में 'अश्वत्थामा हतौ' वाला झूठ नहीं बोल गया होता तो शायद भगवान जीतते नहीं। इसलिए राजनीति में पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ झूठ बोलना चाहिए। कल वे बताएंगे कि कमीनापन कितना जरूरी गुण है।

हमारे एरिया में लोकल लोकतंत्र भी है। इसमें कोई सवाल मत उठाइएगा। जब पूरे देश में लोकतंत्र है तो हमारा एरिया उससे बाहर थोड़ी है। तो ... यहाँ डबल इंजन लोकतंत्र है, मतलब लोकतंत्र के अंदर एक और लोकतंत्र है, दद्दू का लोकतंत्र। अपने लोकतंत्र को जिंदा रखने के लिए दद्दू कितना आलोकतांत्रिक होंगे यह समय और जरूरत के हिसाब से तय होता है। आसपास के सभी केबल टीवी वालों को दद्दू ने गोद ले रखा है। पोलटिक्स में करना पड़ता है, अपुन सिख रहे है उनसे। आदमी सही हो और मेढकों को गोद ले ले तो वे सांप बन जाते हैं। बस जरूरत के हिसाब से तमाशा दिखवाओ और ताली बजवाओ। आसपास के टोलों-बस्तियों की नस नस पता है दद्दू को। दलित टोले में जाएं या बाभन टोले में, जिस टोले में जाते हैं उसके हिसाब से रंग बदल लेते हैं। हिजड़ा बस्ती में नाच लेते हैं और वृद्ध आश्रम में रो भी लेते हैं। लोग भले ही समझें कि दद्दू सस्ती टुच्ची राजनीति करते हैं लेकिन दद्दू का कहना है कि वे जेनरिक-पोलटिक्स करते हैं। मल्टीटेलेंट वाले आदमी हैं दद्दू। बहुरूपिया भी पंद्रह बीस दिन एक भेष में रहता है, दद्दू एक दिन में आराम से पंद्रह बीस भेष धर लेते हैं। गिनिस बुक वालों का ध्यान गया नहीं उन पर अभी तक, लेकिन गलती उनकी है। सारी दुनिया उनके कारनामे देख रही है लेकिन वो ही नहीं देख रहे हैं।

तो लगे हैं भईया, कुछ सीख लें अच्छी अच्छी बातें। काबिल हो गए तो राजनीति के तालाब में हम भी मछलियाँ मार लेंगे। फिर दद्दू को भी तो चाहिए अपना उत्तराधिकारी।

चण्डीगढ़ से सूरत वाया खजुराहो का राजनीतिक संदेश

राजनीति

बादल सरोज

लेखक लोकजतन के संपादक हैं।

सूरत में जो हादसा हुआ है वह किसी भी सभ्य समाज और परिपक्व लोकतंत्र पर एक धब्बा है - इसलिए यह सिर्फ सूरत का हादसा नहीं है। जैसा कि अब तक लगभग सब जान चुके हैं कि इस संसदीय क्षेत्र के चुनाव अधिकारी, जो आम तौर से कलेक्टर होता है, ने 18वीं लोकसभा के लिए होने वाले चुनाव में सूरत संसदीय क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार मुकेश दलाल को निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया है। यह काम जिस तरह से किया गया है वह जनादेश की चोरी से शुरू हुई यात्रा के लोकतंत्र के अपहरण से होते हुए मताधिकार की लूट की खतरनाक स्थिति पहुंच जाने के संकेत देता है।

जैसा सूरत में हुआ वैसे निर्विरोध निर्वाचन के लिए जरूरी होता है कि सिर्फ एक प्रत्याशी बचे - उसके सामने कोई न हो। अब ऐसा अपने आप तो होने से रहा। लिहाजा सबसे पहले तो उनके विरुद्ध इंडिया गठबंधन के साझे उम्मीदवार। कांग्रेस प्रत्याशी नीलेश कुम्भानी और उनके डमी उम्मीदवार सुरेश पाडसाला का नामांकन रद्द करवाया गया उसके बाद बाकी बसपा और 3 छोटी पार्टियों के उम्मीदवारों को 'बिठवाया' गया और इस तरह भाजपा के मुकेश भाई दलाल को जितवाया गया। यह सब करवाया, बिठवाया और जितवाया गया जैसे क्रियापदों का इस्तेमाल करने की वजह समझनी है तो इसकी पूरी क्रोनोलोजी देखनी होगी। संक्षेप में यह इस प्रकार है।

इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार और उनके डमी प्रत्याशी ने अपने नामांकन दाखिल किये। जब उनकी जांच 'स्क्रूटिनी' का समय आया तो पता चला कि उन दोनों के ही चारों प्रस्तावक सिर्फ 'गायब' ही नहीं हो चुके हैं, बल्कि उन चारों प्रस्तावकों के शपथ पत्र भाजपा उम्मीदवार की तरफ से निर्वाचन अधिकारी को भी प्रस्तुत कराये जा चुके हैं जिनमें उन्होंने दावा किया है कि प्रस्तावक के रूप में किये गए हस्ताक्षर उनके नहीं हैं। इस आधार पर कांग्रेस प्रत्याशी नीलेश कुम्भानी और उनके वैकल्पिक प्रत्याशी सुरेश पाडसाला के नामांकन खारिज कर दिए गए। हालांकि अब यह भी तथ्य भी सामने आ चुका है कि भाजपा का मैनेजमेंट सिर्फ प्रस्तावकों भर के लिए नहीं था, स्वयं नीलेश कुम्भानी और उनके वैकल्पिक प्रत्याशी भी मैनेज किये जा चुके थे। कांग्रेस उम्मीदवार द्वारा बजाय पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के अपने करीबी रिश्तेदारों को ही प्रस्तावक बनाए जाने और इस काण्ड के बाद से खुद भी लापता हो जाने से साफ़ हो जाता है कि सूरत के 18 लाख मतदाताओं के साथ विश्वासघात की यह पटकथा काफी पहले लिखी जा चुकी थी।

बहरहाल मैदान अभी भी साफ़ नहीं था। अभी भी 8 उम्मीदवार बाकी बचे थे, जिनमें से एक बहुजन समाज पार्टी के प्यारेलाल भारती भी थे! कांग्रेस प्रत्याशी का नामांकन अस्वीकार किये जाने की खबर मिलते ही, बदले हुए हालात में, इंडिया गठबंधन की तरफ से तुरंत बीएसपी प्रत्याशी के समर्थन की घोषणा कर दी गयी। आम आदमी पार्टी ने इसका सार्वजनिक एलान भी कर दिया। तमाम तरह की आशंका को देखते हुए बसपा ने तुरंत अपने प्रत्याशी को भूमिगत करके वडोदरा में एक जगह पहुंचा दिया। जब भाजपा इस प्रत्याशी को नहीं ढूंढ पाई तो गुजरात पुलिस की क्राइम ब्रांच को इस काम पर लगाया गया और सुबह 4 बजे तक वडोदरा के उस फ़ार्म हाउस को घेरा जा चुका था जहां बसपा उम्मीदवार ने शरण ली हुई थी। बसपा के प्रदेश अध्यक्ष के अनुसार उन्होंने फ़ौरन इसकी जानकारी जिला निर्वाचन अधिकारी सहित पुलिस और प्रशासन को दी। मगर अंततः वही हुआ जो किया जाना था, नाम वापसी का समय खत्म होने से ठीक पहले प्यारेलाल भारती कलेक्टर के सामने हाजिर करवाकर उनका भी नामांकन वापस करवा दिया गया।

अब बाकी बचे 7, जिनमे लोग पार्टी के शोएब शेख, सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्टी के अब्दुल हमीद खान, ग्लोबल रिपब्लिकन पार्टी के जयेश मेवाड़ा और तीन निर्दलीय भारत प्रजापति, अजीत उमट और बरैया रमेश; समय निकलने के पहले उनकी भी वापसी करवा दी गयी। और इस तरह सूरत यह बनी कि बिना मतपत्र छपे ही गुजरात के सूरत को सांसद के रूप में कोई मुकेश दलाल में मिल गए।

यह किसने किया इसका पता लगा लगाने की जहमत न उठानी पड़े इसलिए भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तावड़े ने खुद कह दिया कि निर्दलीय प्रत्याशियों को चुनाव मैदान से हटाने के लिए प्रयत्न किये थे। अब यह कैसे हुआ होगा इसका पक्का अनुमान लगाने के लिए राकेट साईंस का ज्ञाता होने की आवश्यकता नहीं है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र कहे जाने वाले देश के लिए यह सचमुच अशुभ और अशोभनीय दोनों है। इससे पहले, इसी तरह का काम दूसरे तरीके से मध्यप्रदेश की खजुराहो लोकसभा सीट, जहां से भाजपा के मध्यप्रदेश अध्यक्ष वी डी शर्मा चुनाव लड़ रहे हैं, पर किया गया। यहाँ से इंडिया गठबंधन की प्रत्याशी मीरा दीपक यादव का नामांकन पत्र भी खारिज करवा दिया गया। इसका आधार प्रत्याशी द्वारा हस्ताक्षर न किया जाना बताया गया ङ्क जबकि केन्द्रीय निर्वाचन आयोग के स्पष्ट निर्देश हैं कि किसी भी नामांकन फॉर्म को अधूरा भरा होने की वजह से रद्द नहीं किया जा सकता। साफ़ प्रावधान है कि यदि प्रत्याशी से कोई जगह भरने से छूट जाती है तो उसका सुधार कराने की जिम्मेदारी स्वयं निर्वाचन अधिकारी की है। निर्वाचन कार्यालय में ठीक इसी काम के लिए दो दर्जन से ज्यादा अधिकारी कर्मचारी तैनात रहते हैं।

कुछ महीने पहले चंडीगढ़ में यह काम अलग तरीके से किया गया था। इसीलिए यह सिर्फ सूरत भर की बात नहीं है। भारतीय प्रायद्वीप के नामचीन शायर रघुपति सहाय फ़िराक़ गोरखपुरी साहब ने एक शेर में कहा है कि

'जिसे सूरत बताते हैं पता देती है सीरत का
इबारत देख कर जिस तरह मानी जान लेते हैं।'

इस तर्ज पर कहें तो सूरत में जो हुआ वह इस देश के लोकतंत्र की आज की जो सीरत है उसका उदाहरण है। पिछले 10 वर्षों से इस देश में संविधान और संविधान सम्मत संस्थाओं के साथ जो हो रहा है उसका भयावह और विद्रूप संस्करण हैं। ये दलदल भारतीय लोकतंत्र को हमेशा के लिए डुबो देने की विनाशकारी ताकत रखता है। इससे पहले कि देर हो जाए, देश की लोकतंत्र हिमायती अवाम, संगठनों, दलों, व्यक्तियों को सूरत से बजे अलार्म की आवाज से खुद भी जागना होगा, बाकियों को भी जगाना होगा।

अवरोधों पर टिका आत्मनिर्भर शहर

वक्रोक्ति

आशीष दशोत्तर

लेखक व्यंग्यकार हैं।

घर से निकलने से पहले और कुछ याद रहे न रहे लेकिन यह याद रखना ज़रूरी है कि आज शहर के अवरोध क्या-क्या है। अपना शहर अवरोधों पर ही टिका है। प्रतिरोध यहां शून्य है इसलिए अवरोध निरंतर बढ़ रहे हैं। अवरोधों के कारणों पर कोई विचार नहीं करता, बल्कि अवरोधों से बचने के लिए घर से निकलते समय यह पता कर लेता है कि आज के अवरोध क्या-क्या हैं? तो आज के अवरोधों की तरफ़ हम भी एक नज़र डालें और अपने दिन की शुरुआत करें।

आज फोरलेन पर राजू भिया ने समाज सेवा करने के लिए कल रात से 25 बाय 25 का एक तंबू गाड़ दिया है। यहां पर आज रात को भजन कीर्तन किए जाएंगे और कल दिन में भंडारा होगा। लिहाजा दो दिन यह रोड बंद रहेगी। राजू भिया से किसी ने पूछ लिया, 'पूरी सड़क रोक दी है । इतना ट्रैफिक यहां रहता है। इसकी परमिशन ली क्या ?' राजू भिया ने गरजते हुए कहा, 'समाज सेवा के लिए कोई परमिशन की ज़रूरत नहीं होती है। यह काम तो समाज का भला करने के लिए कर रहे हैं। लोगों का क्या है, एक दिन दूसरी तरफ़ से निकल जाएंगे ।उधर चंदू कबाड़ी ने लंबी गली में अपना पूरा कबाड़ा बिखेर कर रखा है । यह उसका हर दूसरे दिन का काम है, इसलिए लोग उस तरफ़ आने-जाने से बचने लगे हैं । चंदू कबाड़ी का कहना है, 'शहर का कबाड़ा ही इतना है, मैं क्या करूं? दुकान में सारा कबाड़ा नहीं आ सकता। अब शहर का कबाड़ा शहर की ही सड़क पर पड़ा है तो किसी का क्या जाता है?' चंदू का बस चले तो सारे शहर की सड़कों पर कबाड़ा बाज़ार लगा दे।

यहां शर्मा जी के घर की छत भराई की रस्म चल रही है। यह अपने शहर की बहुत

प्रचलित रस्म है। हर गली -मोहल्ले में रोज किसी ने किसी के यहां यह संस्कार होता है। जीवन के तमाम संस्कारों में लोगों को जितनी तकलीफ़ नहीं सहना पड़ती, उतनी तकलीफ़ इस एक संस्कार में सारे शहर को भोगना पड़ती है। छत भराई के लिए सारा सामान सड़क पर बिखेर दिया जाता है । पूरी सड़क रोक दी जाती है । जब तक छत भराई का काम होता है तब तक उधर से कोई गुज़र नहीं सकता । शर्मा जी के यहां भी छत भराई के लिए आज पूरी सड़क रोक ली गई है। इस तरफ़ रहने वाले नगर पालिका के कुछ अधिकारी भी इस रुकी सड़क को देखते हुए दूसरी तरफ़ निकल से निकलने की कोशिश कर रहे हैं। इस तरह ज़िम्मेदारों के मौन समर्थन से यह संस्कार निरंतर पल्लवित हो रहा है।पुराने चौक के मुहाने पर बहुत सा सामान रखा हुआ है। यहां राहगीरों को पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए व्यापारी संघ द्वारा बहुत बड़ी प्याऊ स्थापित की जा रही है ।पहले यह चर्चा थी कि यह प्याऊ व्यापारी मोहल्ले में ही स्थापित की जाएगी, लेकिन सभी व्यापारियों ने इस पर आपत्ति ली। उनका कहना था कि यहां प्याऊ लगाने से तो दुकानों के आगे अवरोध होगा, इसलिए पुराने चौक के कोने को चुना गया। यहां पर किसी की दुकान प्रभावित नहीं होगी। यह और बात है कि इससे पुराने चौक का आधे से अधिक रास्ता दब जाएगा। वाहन नहीं निकल पाएंगे, लेकिन कोई बात नहीं । प्यासे को पानी पिलाने से बड़ा धर्म और भला क्या है? इस धर्म के लिए लोग थोड़ा अधर्म सह भी लें तो क्या फ़र्क पड़ता है ? यह प्याऊ कब तक स्थापित रहेगी, कहां नहीं जा सकता , क्योंकि शहर में इस तरह पूर्व के वर्षों में स्थापित प्याऊ अब तक हटाई नहीं जा सकी है।

सिटी टू लेन पर वाहिद भाई ने अपनी बेटी के विवाह समारोह के लिए बड़ा सा तंबू तान दिया है। विवाह की सारी रस्में यहीं होंगी। विवाह समारोह दस दिन तक चलेगा। तब तक यह तंबू इसी तरह लगा रहने की उम्मीद है। इस कारण टू लेन दस दिनों के लिए वन लेन में तब्दील हो जाएगा, और यह तय है कि इन दस दिनों में किसी भी ज़िम्मेदार का ध्यान इस तरफ नहीं पड़ेगा।

तो इतने सारे हैं आज के अवरोध। नागरिक इन अवरोधों को ध्यान में रखते हुए अपने दिन की शुरुआत करें। वैसे नागरिकों का यह मानना है कि ये अवरोध आज के नहीं, रोज के हैं। ये अवरोध अपने शहर के नहीं, हर शहर के हैं। हर कोई इन अवरोधों को सह रहा है और आंखों पर पट्टी बांधकर बैठे ज़िम्मेदारों को कोस रहा है।

आम चुनावों के बीच कटाक्ष-क्रांति

दृष्टिकोण

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

आम चुनावों के बीच लोग कटाक्ष-क्रांति की ओर अग्रसर हैं। वे अपने हाथों में मोबाइल फोन की बैटरी की मशाल जलाकर की-बोर्ड पर दिन-रात अपनी अंगुलियां नचा रहे हैं। झूठी बातों, कुतर्कों और गालियों का जुलूस निकाल रहे हैं। इस कटाक्ष-क्रांति में इतनी प्रूफ मिस्टेक है कि समझ नहीं आता, लोगों के मन में क्या भरा है? वे अन्याय के खिलाफ़ बोलने के लिए घर से बाहर नहीं निकल रहे। वे तो बस घर बैठे ही एक-दूसरे पर कटाक्ष कर रहे हैं। हर कोई किसी न किसी अन्याय के पक्ष में जयकारे लगा रहा है। वह जिस अन्याय से बंध गया है उसी को न्याय निरूपित करने में जीवन गंवा रहा है।

अपने-अपने अन्याय के पक्ष में दूसरों के ख़िलाफ़ मोबाइल के चमकते स्क्रीन पर कटाक्ष-क्रांति हो रही है। शायद लोग यह विवेक करना ही भूलते जा रहे हैं कि न्याय किसे कहते हैं। बस किसी तरह जीवन कट जाये, यही फूल उनके जीवन में रोज़ खिलता है, मुरझाता है। यही हाल उन राजनीतिक दलों का है। वे दिन गिनते हैं कि कितने दिन राज कर लिया। उनके प्रवक्ता मीडिया चैनल के स्क्रीन पर छोटे-छोटे चौखटों में एंकर सुंदरी की अंगुलियों पर नाचते-से लगते हैं। वे अपने दलों और उनके दादे-परदादों के अन्याय पर परदा डालने को ही महान राजनीतिक कर्म मानकर घण्टों बक-बक करते रहते हैं। मीडिया चैनलों पर बैठे-ठाले प्रायोजित की जाती इन बहसों को ताल ठोक के किसी दंगल की तरह रोज़ सम्पन्न किया जाता है। मीडिया ही अब धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र है। वही-वही लोग हरेक भौंका चैनल पर दिखायी देते हैं और अपने-अपने दलों के पापों को महिमा मण्डित करके एक-दूसरे के पापों का घड़ा फोड़ते रहते हैं। हमने आज तक किसी दल के नेता और उसके प्रवक्ता को अपने पाप स्वीकार करते हुए नहीं देखा। वे दोषसिद्ध होने से बचने के लिए सत्ता की ओर झुकें पलड़े पर तुल जाने को बेकरार रहते हैं। चोरी करके चोर दरवाज़ों से राजसभा में विराजते हैं। कुछ किताबी बौद्धिकों ने आनलाइन दूकानें खोलकर अपने पक्ष की राजनीतिक सत्ता के झूठ को छिपाने का धंधा खड़ा कर लिया है। अब बाहर निकलकर कोई कुछ नहीं कर रहा। नेता बंद कमरों में बैठकर राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में अन्याय की योजना बनाकर उसे घर-घर तक फैला रहे हैं। लोभ-लालच से भरे राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र ही युद्ध का मैदान बन गये हैं। आम सभाओं में भाषा ही भाषा से लड़ रही है। जनता घर बैठकर अपने-अपने मन के अन्यायों को चुनने के लिए विवश है। मीडिया और सोशल मीडिया पर कटाक्ष-क्रांति वीरों के चेहरे अपनी-अपनी मतान्धता में दमक रहे हैं। जो दल सत्ता से बाहर हैं उनमें से ज़्यादातर अपने पार्टी दफ़्तर में बैठकर फेसबुक के स्क्रीन पर सत्ता से लड़ रहे हैं? डूबते को अब कटाक्ष-क्रांति भी कुछ दिन का ही सहारा है। यह भी ज़्यादा दिन चल नहीं पायेगी।

राग-कथा-सुर तारीं हो जाएं तो बंदा सितारा हो जाए

पुस्तक चर्चा

राग तैलंग

समीक्षक

मुझे लगता है कि कुछ किताबें पवित्र होने की प्रक्रिया के लिए ही तैयार की जातीं हैं। इनका पता सिर्फ उन्हीं विशिष्ट लोगों को होता है जो पवित्र मनोभूमि से आए हुए होते हैं और जो दैवीय दायित्व की समझ लेकर अपने होने की भूमि को भी पवित्र बनाते चलते हैं। ऐसे मिस्टिक और वैल्यू ओरिऐन्टेड व्यक्तित्व क्या सचमुच होते भी हैं या ऐसी भी कुछ किताबें होतीं हैं जो साबुन के जैसा काम भी करती हों। क्या ऐसा नहीं लगता कि यह सब एक रहस्यवाद से संबंधित संवाद भर है। यदि आप संगीत के वायरलेस पक्ष यानी आनुभूतिक सौन्दर्यावलोकन की दुनिया में कोयल की तरह उषा-संध्याकाल में मौजमस्ती में प्रवेश कर अंत में अपनी बस्ती में अलस्सुबह किसी पेड़ पर एक मौसम के आगमन को स्वर देने की इच्छा रखते हैं तो एक बिरली किताब और उसके बारे में यहां लिखे जा रहे अबूझ से लगते कुछ वाक्यांश आपकी नज़र से यहां गुजरने को बेताब हैं।

आज हम ऐसी ही एक दुर्लभ श्रेणी की किताब 'राग-कथा' की बातें करेंगे और समझेंगे कि किताबें हमें अपने-आपको पढ़वाने के बाद हमारे साथ ऐसा क्या कर जातीं हैं कि जिसके बाद लगने लगता है कि ये जीवन मामूली तो नहीं ही है,इसके हमें मिलने के पीछे कोई न कोई महान उद्देश्य ज़रूर है। शहरी जीवनशैली के आदी हम भूल जाते हैं कि हमारे अंदर सदा से संपोषित एक औषध स्वरूपी वन हमारे नितांत अंतर्मन में भी वास करता है जिसमें गुंजायमान स्वर लहरियां गाहे-बगाहे हमें अपनी ओर खींचती रहती हैं। प्रकृति की यह पुकार शब्दों में आत्मा के अधिवास यानी अध्यात्म या रूह या अशरीरी कहलाती है।

यह नायाब किताब 'राग-कथा' प्रख्यात चिंतक, मनोविश्लेषण कर्ता और सलाहकार श्री वासुदेव मूर्ति की अंग्रेजी पुस्तक का भावानुवाद है,इसके पन्नों पर कई बेमिसाल इशारे श्री वासुदेव मूर्ति और मूल किताब के बहाने अनुवादक श्वेताम्बरा कर जाती हैं। मसलन मनुष्य में चेतना की कई परतों के नीचे दबीं पुरा स्मृतियां किस तरह उभार पाकर ठीक परिस्थितियों में सामने आतीं हैं? अंतर्भूत ज्ञान का उद्गम और मानव शरीर के भौतिक संघर्ष का क्या कोई अंतर्संबंध है? जिज्ञासा और कौतूहल से भरे संगीत से संबद्ध सात स्तरों के प्रश्न पाठक को धीरे-धीरे साथ ले जाते हुए चेतना से जोड़े वाले उस बिंदु पर लाकर छोड़ते हैं,जहां माया है न मोह की दुनिया। अगर है तो बस एक सिद्धांत यानी शांति और मौन का संगीत। पुस्तक की रवानगी में आध्यात्मिक रस का पुट होने से हर पल अलौकिक तल में होने का अहसास बना हुआ चलता है। यह इनहेरेंट आध्यात्मिकता मूल कृति का केंद्रीय भाव है,इसे समझा जा सकता है। शाश्वत सत्यार्थ प्रकाश तक पहुंचने का मार्ग आध्यात्मिक होने के रास्ते से ही जाता है,यह वह ईंधन है जो एक पाठक के भीतर ज्योत जलाने के लिए और साथ ही बाती भिगोने के काम भी आता है। ऐसे प्रकाश की ओट में तैयार रचना से रचनाकार के विचार-व्यक्तित्व में भी रहस्यदर्शिता आ जाती है जिसके लिए आज का फैशनेबल शब्द मिस्टिसिज़्म है। मिस्टिसिज़्म का जो अर्थ मैं लेता हूं वह कुछ ऐसा है कि वह जिसे हर शै में सार्थकता दिखाई दे,शाश्वत दिखाई दे। यह शब्द एक संपूर्ण चैतन्य व्यक्तित्व के अस्तित्व में तैयार हो जाने का द्योतक भी है।

'राग-कथा' पुस्तक की अनुवादक श्वेताम्बरा से एक पुस्तक-चर्चा के कार्यक्रम में परिचय हुआ। किताबों, शब्दों, अक्षरों, सात सुरों-वर्णक्रम के बहाने हर बार की तरह उस आयोजन में भी मैं ऊर्जा पर अपनी बात फोकस करना चाहता था। उस महफिल में भी मैं कहना चाहता था कि जिस ऊर्जा की सब आकांक्षा करते हैं,चाहत रखते हैं वह मिले-जुले रूप में प्रकाश और ध्वनि ही है। दोनों ऊर्जाओं का स्वाद एक-सा ही है। एक-सा आनंद दोनों में है। आपने एक आवाज़ भर को अगर समझ लिया तब तो फिर आपने समूची दुनिया की आवाज़ को,उसकी पसंद-नापसंद को समझ लिया। जैसे एक आत्मा को जान लेने भर से आप परमात्मा को भी जान लेते हैं वैसे ही तरंगों की मूल प्रकृति को जान लेने आप प्रकृति के रंगों को भी जानने लग जाते हैं। संगीत समग्रतः एक दुनिया की एक आत्मा की आवाज़ है,इसमें विचरता कलाकार दुनिया के सिर का ताज है। कलाकार भी वही है जिसके पास अपनी खुद की आवाज़ है,जो खुद को नहीं जानता उसे कोई नहीं जानता। यह किताब जिसका नाम 'राग-कथा' है,एक ऐसी किताब है जिसमें संगीत की दुनिया का जादुई यथार्थवाद सामने लाने की एक ईमानदार कोशिश की गई है। इसे समझ लेने के बाद पाठक के भीतर सांगीतिक स्नेह-सूत्र और संगीत के पाठक में स्वयं एक साज़-सा होने की अनुभूति के कंपन पैदा होंगे ही होंगे,इतना निःशंक तौर पर कहा जा सकता है।

किताब के प्रारंभिक अध्याय क्रमशः 'सुर में' में तानपूरा हो जाने का अहसास या 'सोरठ देस में' में सभी सुरों की आलंकारिक माला रूप में वर्णन पढ़कर 'वाह उस्ताद! वाह!' कह उठने को मन कहता है। किताब के अन्य विभिन्न अध्यायों में पाठक जब आध्यात्मिक लहज़े में ईश्वरीय संवादों से रूबरू होता है तब उसे भान ही नहीं होता कि वह किसी काग़ज़ के पन्ने से मुख़ातिब है या वह इबादत नहीं कर रहा है। बहरहाल वासुदेव मूर्ति जी और विदुषी श्वेताम्बरा ऐसी सच्ची और दिलचस्प अभिव्यक्तियों वाली पंक्तियों के लिए याद रह जाते हैं,आईए देखते हैं। एक-मैं सोचता हूं और विलाप करता हूं कि ईश्वर के लिए हमारी खोज एक प्रश्न से शुरू होती है,लगभग एक शिकायत से। दो-एक शिथिल मनोरम एकताल ने समय को बिना किसी जल्दबाजी के चिन्हित किया। फिज़िकल से ईथरिक फिर एस्ट्रल फिर मेंटल फिर स्पिरिचुअल मोड में जाकर 'राग-कथा' को पढ़ना फिर उस पर यह सब लिखना एक अलग तरह का प्रयोग रहा जिसे मुंबई के मेरे मित्रवर व सितारवादक शशिकांत पाठक ने संभव किया,इस विशेष लेखकीय मिशन हेतु मुझे मुंबई बुलाया और समुद्र तट के इलाके में रहने की व्यवस्था कर इस लेख के प्रकटीकरण के लिए सारा इंतज़ाम किया। मुझे इस दौरान ऐसा लगता रहा कि जैसे मैं डायमंड की पालिश प्रक्रिया के लिए नियुक्त किया गया हूं।

एक लाइब्रेरियन के रूप में रोजी-रोटी की शुरूआत करके और अंततः पाठक ज्यादा लेखक कम के रूप कह सकता हूं कि यह किताब पाठक को तब्दील कर सकने का कीमिया अपने भीतर रखती है। इस किताब में से हर उस शख़्स को गुज़रना चाहिए जो संगीत की मालूम-नामालूम गलियों का दौरा करता फिरता है। दुनिया की चुनिंदा बेहतरीन किताबों और चंद दैवीय लेखकों का सान्निध्य पाकर अब कहने का इतना साहस तो आ ही गया है कि जिस वैचारिकी के तहत इस किताब को भावानूदित कर संगीत में धूनी रमाए लोगों की धुन के नाद को कलम में थामा गया है अगर इसे कोई समझदार,सुधी पाठक नहीं समझ पाए तो इसे फिर स्याही पर ही लानत समझा जाए। दुनिया आदमियों को पढ़कर पहचानने की लाइब्रेरी है। यहां आदमी नाम की किताब निःशुल्क उपलब्ध है,लेकिन कुछ अपवाद भी हैं। जैसे दुनिया की बेहतरीन पुस्तकें सबकी पहुंच में नहीं वैसे ही बेहतरीन आदमी भी सबको मिल पाना सबके नसीब में नहीं। दुनिया की सबसे मूल्यवान चीज़ें क्या हैं यह बहुतों के लिए नामालूम विषय है।

पेशे से चिकित्सक श्वेताम्बरा की यह रेअरेस्ट ऑफ रेअर कृति अपनी लेखकीय महत्वाकांक्षा को सीमितता में रखते हुए प्रख्यात वायलिन घराने के आनुभविक व इंट्यूशनल अंतर-सूत्रों को सामने लाने का स्तुतनीय प्रयास है। इस कृति को पढ़कर बेशक़ कहा जा सकता है कि संगीत ही भौतिकता की वह चौहद्दी है जहां से ट्रांस के,अलौकिक अनुभूति के द्वार मालूम पड़ते हैं,इसके पहले का सब कुछ तमन्नाओं का संसार हैं। यहां आगे हमारा असली मैं मिलता है।

मध्यप्रदेश के कला,संगीत,संस्कृति के संरक्षकों को इस नायाब, अप्रतिम कृति के साथ दृष्टि-न्याय की सुध आएगी ऐसी ईश्वर से कामना करनी चाहिए। अगर आप संगीत से थोड़े भी वाबस्ता हैं और आपने आपने जीवन से आश्चर्यों को अब तक बेदखल नहीं कर दिया है तो 'राग-कथा' आपके हाथों में होना मांगती है। 'राग-कथा' प्रख्यात चिंतक,मनोविश्लेषण कर्ता और सलाहकार श्री वासुदेव मूर्ति की यह एक किताब कुछ अलग तरह का आस्वाद पाठकों को देना चाहती है तो वह ईजाद की श्रेणी में दर्ज होना चाहिए।

पुस्तक- राग-कथा
लेखक- वासुदेव मूर्ति
अनुवादक - श्वेताम्बरा
प्रकाशक-सूर्य प्रकाशन मंदिर,बीकानेर
मूल्य- 450/-

श्रीविनायकम स्कूल के यश पवार ने स्टेट मेरिट लिस्ट में प्राप्त किया दसवां स्थान

आर्मी आफिसर बनना चाहते हैं यश पवार

संजय द्विवेदी, बैतूल।

मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा 10वीं व 12वीं बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम आज बुधवार को घोषित किए गए। जिसमें जिले के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान श्री विनायकम स्कूल बैतूल के छात्र यश पवार ने 96.4 प्रतिशत अंकों के साथ कक्षा 12वीं में स्टेट मेरिट लिस्ट में दसवां स्थान सुनिश्चित किया है। इस शानदार परिणाम से परिवार एवं विद्यालय सहित पूरे जिले में हर्ष की लहर व्याप्त है।

यश की इस उपलब्धि पर बैतूलबाजार निवासी परिवार सहित विद्यालय के संचालक संजय राठौर, श्री खासदेव सर, प्राचार्य एवं सभी गुरुजनों ने शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि राज्य प्रावीण्य सूची में बैतूल जिले से एकमात्र विद्यार्थी श्रीविनायकम स्कूल से यश पवार है। इससे पूरे राज्य में बैतूल जिले का गौरव बढ़ा है।

बैतूलबाजार के यश के पिता कमलेश पवार एक किसान है साथ ही टोल कर्मी भी है।

आज यश की इस कामयाबी ने माता जयश्री पिता कमलेश पवार का सर गर्व से ऊंचा कर दिया है। माता पिता दोनो ही बहुत खुश है। उन्होंने मिठाई बांटकर खुशी का इजहार किया। यश पवार ने अपनी इस कामयाबी का श्रेय स्कूल के टीचर्स और माता पिता को दिया है। यश ने बताया कि वह सेना में जाना चाहते है, स्कूल में जो पढ़ाया जाता था उसका डटकर रिवीजन करता था और रोजाना 6 से 7 घंटे की पढ़ाई करता था, उसमे जो भी डाउट होते थे, तो यूट्यूब पर देखकर क्लियर किया करता था या अपने टीचर से पूछता था।

अपने पुत्र की इस कामयाबी पर पिता कमलेश पवार का कहना है कि उन्हें बहुत खुशी हुई है पर कंही थोड़ी कसर रह गई, उन्होंने इससे ज्यादा की उम्मीद की थी। अपने बेटे की आर्मी में जाने की ख्वाहिश की वे सराहना करते है और वो खुद भी चाहते है की उनका बेटा आर्मी में जाकर देश सेवा करें और देश का नाम रोशन करे। यश की माता जयश्री पवार ने अपने बेटे यश की इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए बताया कि यश खुद से पढ़ाई करता था। घर पर सुबह 4 बजे से उठकर पढ़ता था, स्कूल स्टाफ ने भी यश का बहुत ख्याल रखा है।

मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने प्रेरित करेंगे नपा बैतूल के कर्मी

बैतूल। जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी एवं स्वीप नोडल अधिकारी अक्षत जैन के निर्देशों के अनुपालन में लोकसभा निर्वाचन 2024 में अधिक से अधिक मतदान किए जाने को लेकर बुधवार को नगर पालिका परिषद बैतूल में अधिकारी, कर्मचारियों की बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान स्वीप अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों के आयोजन पर चर्चा की गई।

सीएमओ ओमपाल सिंह भदौरिया ने बताया कि नगर पालिका परिषद के कर्मचारी शत-प्रतिशत मतदान किये जाने हेतु डोर टू डोर मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करेगे तथा पहचान हेतु परिचय पत्र के अलावा 12 चिन्हित पहचान पत्र के संबंध में नागरिकों को जागरूक करेंगे। निकाय द्वारा प्रदान किये जाने वाले स्टीकर घरों पर चिपका कर तथा मार्कर पेन से घरों को चिन्हित करेंगे।

सीएमओ ने बताया कि सबसे अधिक मतदान वाले तीन मतदान केन्द्रों को पुरस्कार दिया जाएगा।

साथ ही 10 मतदान केन्द्रों को सांत्वना पुरस्कार दिये जाने का निर्णय लिया गया है। इस

अवसर पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी एवं नीरज धुर्वे, सहायक यंत्री विजय हुद्दार कार्यालय अधीक्षक, ब्रजगोपाल परते, राजस्व निरीक्षक, अखिल नीलकंठ राय, राजस्व उप निरीक्षक, शोभाराम वरकड़े सहायक वर्ग 01 एवं निकाय के सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

नेशनल लोक अदालत का आयोजन 11 मई 2024 को

अध्यक्ष विधिक श्री प्राण ने मोबाइल वैन को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

बैतूल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं जिला न्यायाधीश डॉ.सुश्री महजबीन खान ने बताया कि लंबित प्रकरणों के निपटारे के लिए अध्यक्ष एवं न्यायमूर्ति प्राणेश कुमार प्राण के मार्गदर्शन में 11 मई 2024 को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि नेशनल लोक अदालत के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु विधिक प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री प्राण द्वारा मोबाइल वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर सचिव विधिक डॉ.महजबीन खान एवं अन्य समस्त न्यायाधीशगण उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि लोक अदालत के माध्यम से प्री लिटिगेशन की सुविधा के द्वारा दोनों पक्ष एफआईआर कराने अथवा किसी भी प्रकार की मुकद्दमे बाजी के पूर्व ही विधिक प्राधिकरण के माध्यम से अपने विवाद सुलझा सकते हैं।

प्री- लिटिगेशन प्रकरणों की डॉ. खान ने की समीक्षा

विधिक प्राधिकरण की सचिव एवं जिला न्यायाधीश डॉ. महजबीन खान ने कहा कि घरेलू हिंसा, दंपत्ति विवाद, सिविल वादों के पीड़ित जिला विधिक प्राधिकरण के नामित एडवोकेट मीडिएटर की बेंच में आवेदन देकर त्वरित न्याय का लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए कोई शुल्क देय नहीं है। पूरी तरह निःशुल्क इस सेवा का लाभ दोनों ही पक्ष को उठाना चाहिए। थाने एवं अदालत की भागदौड़ से मुक्ति के साथ त्वरित न्याय की भी गारंटी होती है। डॉ.खान प्री लिटिगेशन प्रकरणों के निराकरण के लिए बैंक मैनेजर, बीएसएनल एवं नगर पालिका के अधिकारियों के साथ समीक्षा कर रही थी।

विद्युत मंडल सारणी की कॉलोनी से खिड़की दरवाजे हो रहे लगातार चोरी

बैतूल। सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारणी में कार्यरत कर्मचारियों के लिए ऊर्जा विभाग द्वारा आवास बनाए गए और यह आवास बहुत बड़ी संख्या में बनाए गए। विद्युत मंडल में कार्यरत कर्मचारियों के सेवानिवृत होने के पश्चात उनसे कुछ महीनो में ही मंडल द्वारा आवास खाली करवा लिए जाते हैं और आवास खाली होते ही चोरों द्वारा उन आवासों में से खिडकी दरवाजे चोरी कर लिए जाते हैं इसके बाद उक्त आवास खंडहर में तब्दील हो जाता है उक्त घटनाक्रम के कारण सारनी नगर मे

कई कालोनियां या तो जमीदौज हो गई या तो खंडहर में तब्दील हो गई उसके बावजूद भी कॉलोनी के आवासों से दरवाजे चोरी होने का सिलसिला नहीं थम रहा कई जगह तो आवास में निवासरत कर्मचारी अगर कहीं छुट्टी पर गया है तो उन आवासों से भी दरवाजे चोरी होने की घटनाएं सामने आई है। बीते एक सप्ताह में कर्मचारियों की कॉलोनी में खाली हुए पांच आवासों से दरवाजे एवं खिड़कियां चोरी हुए इसके बाद वह आवास खंडहर जैसे हो गए,नगर के बीचों-बीच दिनदहाड़े ऐसी चोरियां हो जाना समझ से परे हैं। कर्मचारियों की कॉलोनी की देखरेख एवं रखरखाव करने वाले सिविल विभाग के कार्यपालन अभियंता सुरेंद्र कुमार पांडे ने बताया कि उक्त घटनाक्रम को लेकर थाना सारनी में लिखित आवेदन देकर कार्रवाई करने की मांग की गई की गई है।

ब्राह्मणवाड़ा में तेज हवाओं के साथ हुई मूसलाधार वर्षा

ग्राम बरई में बिजली गिरने से तीन मवेशियों की मौत

बैतूल/मुलताई। बीते दो दिनों से क्षेत्र के मौसम में आय बदलाव ने एक बार फिर क्षेत्र के किसानों की चिंता बढ़ा दी है।

बुधवार को ग्राम ब्राह्मणवाड़ा और उसके आसपास के ग्रामों में तेज आंधी तूफान के साथ हुई वर्षा ने अनेक वृक्षो को जड़ से उखाड़ फेंका, ब्राह्मणवाद के समीप स्थित आधार दर्शन से अधिक ग्रामों में जमकर आंधी और मुर्शिदाबाद वर्षा हुई जिसके चलते सब्जी की फसल पूरी तरीके से चौपट हो गई वही गेहूं की दावन के बाद खलीयान में रखा भूसा बर्बाद हो गया बता दे की ग्रामीण क्षेत्र में गेहूं की रावण के बाद निकलने वाला भूसा मवेशियों के लिए साल भर उपयोग में आता है इस बे -मौसम बरसात ने भूसे को भारी नुकसान हुआ है जिससे किसानों को वर्ष भर भूसे की किलत से गुजरना पड़ेगा ।

किसानों ने बताया कि क्षेत्र में 2 दिन से हो रही वर्षा के चलते खेत में लगी सब्जी की फसल को भी भारी नुकसान हुआ है। वहीं दूसरी ओर ग्राम बरई में आकाशीय बिजली गिरने से तीन मवेशियों की मौत हो गई। मुलताई क्षेत्र मे बीते दो दिनों से मौसम में आय बदलाव ने एक बार फिर क्षेत्र में कहर बरपाना प्रारंभ कर दिया है। ग्राम बरई में तेज आंधी तूफान और बारिश के साथ अचानक से बिजली गिरने के चलते एक खेत में बंधे तीन मवेशियों की मौत होने की जानकारी मिल रही है। प्राप्त जानकारी अनुसार ग्राम बरई निवासी ढेपुल पुत्र गेंदू कसारे के खेत में दो भैंस और एक गाय बंधी हुई थी।

अचानक से तेज आंधी तूफान के साथ बारिश होने और इस दौरान बिजली गिरने से तीनों की मौत हो गई। हालांकि गनीमत रही की इस समय खेत में कोई और मौजूद नहीं था। घटना के बाद इस संबंध में उन्होंने मुलताई पुलिस थाने पहुंचकर सूचना दी। ग्रामीणों द्वारा बताया गया कि अचानक से गिरी बिजली से तीनों मवेशियों की मौत हो गई है, वहीं बारिश से नुकसान भी पहुंचा है।

स्व. अवनीश पाटणकर की स्मृति में ध्यान केन्द्र का शुभारंभ

मानसिक दिव्यांग छात्र होंगे लाभांवित

बैतूल। जय नारायण सर्वोदय विद्यालय परिसर 'घरोंदा' में स्व.अवनीश पाटणकर की स्मृति ध्यान केन्द्र प्रारंभ किया गया। संचालिका श्रीमती करुणा ताई देशमुख और श्रीमती हेमलता पाटणकर ने बताया कि इस ध्यान केन्द्र का इस आवासीय परिसर में रहने वाले मानसिक दिव्यांग छात्रो को और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के सभी आयु वर्ग के लोगो के लिए भी ध्यान केन्द्र का लाभ मिलेगा।

ध्यान केन्द्र में लगे पिरामिड के नीचे ध्यान करने से तीन गुना अधिक लाभ मिलता है। ध्यान केन्द्र में ध्यान करने से दिमाग और शरीर दोनो स्वस्थ्य रहते हैं। ध्यान के शारीरिक आरोग्य, एकाग्रता, बुद्धि विकास, विचार क्षमता, आत्मविश्वास, कार्य क्षमता आदि अनेक लाभ है। ध्यान से आलस्य में कमी और सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। विशेषत- मानसिक दिव्यांग विधार्थियों का बौद्धिक विकास व एकाग्रता से जीवन के सभी लक्ष्यों को हासिल करने में सहायता मिलती है। ध्यान केन्द्र की सभी सुविधाएं नि:शुल्क है। ध्यान केन्द्र का शुभारंभ मेडिटेशनल गुरू विजेन्द्र पवार एवं श्रीमती वैशाली पवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम संस्था अध्यक्ष जगदीश प्रसाद लिल्होरे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन दीपक आम्बेकर ने व आभार हेमलता पाटनकर ने व्यक्त किया। इस अवसर पर सुनील हिरणी, पारस भोपते, प्रवेश कावरे, विजय जसूजा, बाबा माकोडे, श्रीमती सुनीता पंडित, विलास पाटील, श्रीमती नीता पाटील व जय नारायण सर्वोदय विद्यालय से दीपक आंबेकर, योगेश धुवारे, श्रीमती अर्चना आंबेकर, कमल देशमुख सहित गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे

शराबी पुत्र ने पिता की कर दी हत्या, आरोपी पुत्र पुलिस की गिरफ्त में

बैतूल। शराबी पुत्र को समझाइश देना पिता को महंगा पड़ गया और गवां दी जान ऐसा ही एक मामला चिचोली थाना क्षेत्र से सामने आया है ग्राम कोडर में एक शराबी पुत्र ने अपने पिता की लकड़ी से पीटकर हत्या कर दी। 24 अप्रैल को थाना चिचोली में फरियादी मनोज वाडिवा ने शिकायत दर्ज कराई की मंगलवार की रात उसका पिता सालक राम वाडिवा उम्र 55 वर्ष बच्चों के साथ गांव में ही शादी में गया था और लौटकर 11 बजे घर आ गए थे। उसके बाद छोटा भाई मनोज रात्रि डेढ़ बजे घर आया और पिता को नींद से उठाकर झगड़ा करने लगा शराब पीने की बात को लेकर की तूने मुझे गांव में बदनाम कर दिया है। आरोपी पुत्र मनोज ने घर में रखी एक लकड़ी से पिता की पिटाई शुरू कर दी तो पिता घर से निकलकर बाहर की ओर भागा जंहा आरोपी ने और पिटाई की जिसमे पिता की मौके पर ही मौत हो गई।

घटना के दौरान मृतक का बड़ा लडका जोकि फरियादी है वह गांव में लोगों को बुलाने गया था की उसका छोटा भाई पिता को पीट रहा है लेकिन जब तक गांव वाले आते तब तक उसके पिता की मौत हो चुकी थी। जिसके बाद उसने थाने में शिकायत दर्ज कराई और चिचोली पुलिस धारा 302 के तहत मामला दर्ज कर आरोपी पुत्र को गिरफ्तार कर लिया है।

आस्था के आगे बारिश भी फीकी पड़ी तेज बारिश के बीच में भी लोग खींचते रहे मन्नत का गाढ़ा ऊदो-ऊदो करते रहे लोग

बैतूल। ग्राम सांईखेड़ा के सभी मन्दिर परिसर में हनुमान जन्मोत्सव पर हनुमान चालीसा का पाठ सामुहिक किया गया एवं चैत उत्सव पर लोगो ने अपनी -अपनी मन्नत की नीम उतारने के लिए आस्था के प्रतीक गाढ़े को खींच कर अपनी मन्नत पूरी की इस बीच लोगो द्वारा लगाए गए जय श्रीराम के नारे से उत्साह का माहौल बना रहा।

भैंसदेही के सुरक्षा गार्ड कर रहे सरकारी अस्पताल में इलाज,नेत्र सहायक एमबीबीएस डॉक्टर बन कर रहे ग्रामीणों का इलाज

बैतूल। जिले के सरकारी अस्पतालों के हालत बद से बदतर हैं आलम ये है कि करोड़ों की लागत वाले आलीशान अस्पतालों में डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ होने के बावजूद सुरक्षा गार्ड गर्भवती महिलाओं का ईलाज कर उनकी जान से खिलवाड़ कर रहा है तो कंही नेत्र सहायक गांव गांव घूमकर एमबीबीएस डॉक्टर की तरह मरीजों का बेधडक ईलाज कर उनकी जान से खिलवाड़ करने में लगे हुए है। बैतूल जिले से सामने आई दो तस्वीरों को देखने के बाद आप आसानी से समझ जाएंगे की सरकारी अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर जिम्मेदार अधिकारी कितने गंभीर है। मामला सामने आने के बाद जिम्मेदार जांच करवा कर कार्यवाही की बात कह रहे हैं।

पहला हैरान कर देने वाला मामला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भैंसदेही का है जन्हा अस्पताल में प्रायवेट कंपनी का सिक्योरिटी गार्ड बाला खंडाईत अस्पताल में इलाज करवाने आई गर्भवती महिलाओं का शुगर,बीपी चैक कर रहा है। ऐसा नहीं है की इस अस्पताल में डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ पदस्थ नहीं है। बावजूद इसके गर्भवती महिलाओं के ईलाज जैसे गंभीर मामले में इलाज कराने आई गर्भवती महिलाओ का सिक्योरिटी गार्ड इलाज कर रहे हैं। बिना किसी प्रशिक्षण के यह सुरक्षागार्ड गर्भवती महिलाओ का चैकअप कर उनकी जान से खिलवाड़ कर रहा है। सुरक्षागार्ड का गर्भवती

महिलाओं का चैकअप करते वीडियो भी सामने आया है।

दूसरा मामला झल्लार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का सामने आया है। इस अस्पताल में नेत्र सहायक के पद पर पदस्थ मुकेश यादव बिना किसी डिग्री के गांव गांव में घूमकर ग्रामीण मरीजों का मोटी रकम लेकर सरकारी दवाएं मरीजों को दे रहा है। नेत्र सहायक किसी एमबीबीएस डॉक्टर की तरह बेखौफ होकर ग्रामीणों का इलाज़ करता है। हर मर्ज की दवा अपने बैग में लेकर झोलाझाप डॉक्टर ग्रामीणों से पैसे लेकर उनकी जान से खिलवाड़ कर रहा है। नेत्र सहायक का ग्रामीणों का इलाज़ करते और पैसे लेकर सरकारी दवाएं देने का वीडियो भी ग्रामीणों ने बनाया है। इन दोनों मामलों के सामने आने के बाद सरकारी अस्पतालों की मॉनिटरिंग पर सवाल खड़े हुए है। जिस प्रकार गर्भवती महिलाओं और ग्रामीणों का इलाज़ किया जा रहा है और सरकारी दवाएं देकर पैसे वसूले जा रहे है इसे रोकने वाला कोई नहीं है। इन मामलों में मरीजों ने दोषियों पर कार्रवाई करने की मांग की है। बैतूल के सीएमएचओ डॉ. रविकांत उईक से जब इन मामलों को लेकर चर्चा की गई तो उन्हे इनकी जानकारी ही नहीं थी। हमारे द्वारा बताए जाने पर वे टीम बनाकर दोनों मामलों की जांच करने की बात कह रहे है। देखना यह होगा की इतने गंभीर मामलों में अब क्या कार्यवाही होती है।

शिकायतकर्ता सचिन श्रीवास्तव जोकि अपने ही परिजन को लेकर अस्पताल गए थे जहां उन्होंने देखा की अस्पताल का पियूंन गर्भवती महिलाओं का बीपी शुगर माप रहा था जोकि गलत है मरीजों की जान से खिलवाड़ किया जा रहा है इसकी जांच होना चाहिए और दोषियों पर कार्यवाही होना चाहिए।

इनका कहना -

इस तरह कोई भी गार्ड मरीजों का या गर्भवती महिलाओं का उपचार या बीपी शुगर नहीं माप सकता, जिसके लिए एक कमेटी गठित की गई है जो कि मामले की जांच करेगी।

- डॉ. रविकांत उईके, सीएमएचओ बैतूल

कलेक्टर एवं एसपी ने किया मतदान केन्द्रों का निरीक्षण

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम अनुसार जिले में मतदान का दूसरा चरण 26 अप्रैल को तीन विधानसभा क्षेत्रों में शत-प्रतिशत मतदान के साथ सुचारू, सुरक्षा व्यवस्था के साथ मतदान संपन्न हो सके। इस हेतु जिला प्रशासन द्वारा मतदान केंद्रों का सतत निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा है। इसी दौरान होशंगाबाद संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत विधानसभा क्षेत्र 119- नरसिंहपुर के मतदान केंद्र सरसला, चिनकी, उमरिया, केरपानी ग्रामों के मतदान केन्द्रों का निरीक्षण कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शीतला पटले व पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार द्वारा किया गया। कलेक्टर श्रीमती पटले ने बीएलओ से चर्चा कर मतदान केंद्र अधिक से अधिक मतदान हो इसके लिए स्थानीय कर्मचारियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, महिला स्व सहायता समूह, आशा कार्यकर्ता, सचिव, रोजगार सहायक, शिक्षक, पटवारी द्वारा स्थानीय स्वीप टीम बनाकर घर- घर जाकर मतदान हेतु प्रेरित किया जाए। साथ ही जिन परिवारों में विवाह होने वाले है उन लोगों से भी मतदान दिवस पर मतदान करने के उपरांत ही वैवाहिक कार्यो को पूरा करने के लिए समझाइश दी जाये।

सेक्टर ऑफीसर की बैठक सम्पन्न

कलेक्टर ने विधानसभा गाडरवारा, तेंदूखेड़ा एवं नरसिंहपुर के सेक्टर अधिकारियों को दिये आवश्यक निर्देश

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन 2024 को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण सम्पन्न कराने के लिये कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शीतला पटले की अध्यक्षता में सेक्टर अधिकारियों की बैठक कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में हुई। बैठक में कलेक्टर श्रीमती पटले ने सेक्टर अधिकारियों को अपने-अपने मतदान केन्द्रों का निरीक्षण करने के लिए निर्देशित किया। मतदान दिवस 26 अप्रैल तक स्थानीय कर्मचारियों की स्वीप टीम द्वारा घर- घर संपर्क कर साथ ही जिन परिवार में विवाह कार्यक्रम हैं, वहां स्थानीय कर्मचारियों, बूथ अवेयरनेस ग्रुप टीम की सहायता से मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित करना। मतदान केंद्र पर मतदाताओं के लिए टेंट, शीतल पेयजल, शौचालय, कूलर, पंखे आदि की उपलब्धता के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। मतदान केंद्र के अंदर मतदाता मोबाइल नही ले जा सके। सुरक्षा गार्ड के साथ साथ मतदान दल भी निगरानी रखे। मतदान केन्द्र में सेक्टर अधिकारी पुलिस सेक्टर अधिकारी से समन्वय बनाकर कार्य करें। मतदान के पूर्व एवं मतदान के दौरान शांति पूर्ण निर्वाचन हेतु आवश्यक निर्देश दिए गए। बैठक में सहायक कलेक्टर श्री शुभम् यादव, उप मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्रीमती अंजली शाह, सीएचएमओ, मास्टर ट्रेनर डॉ. सीएस राजहंस, श्री मनीष अग्रवाल सहित विधानसभा गाडरवारा, तेंदूखेड़ा व नरसिंहपुर के सेक्टर अधिकारी उपस्थित रहे।

विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को किया जा रहा जागरूक

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन- 2024 के अंतर्गत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शीतला पटले एवं सीईओ जिला पंचायत व नोडल अधिकारी स्वीप श्री दलीप कुमार के मार्गदर्शन में जिले में मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूकता लाने विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।मतदाता जागरूकता अभियान के तहत सारा कंप्यूटर सेंटर गाडरवारा की छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता पर रंगोली बनाई एवं वोट देने की शपथ ली। पीएमश्री शासकीय हाईस्कूल मोहद के छात्र-छात्राओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली। ग्राम रौंसरा, ग्राम नकटुआ, ग्राम रानी पिपरिया व ग्राम मैनावार में महिलाओं ने मतदान करने की शपथ ली। नगर परिषद चीचली में सेल्फी लेकर मतदाताओं को मतदान करने के लिए प्रेरित किया। स्वीप गतिविधियों के अंतर्गत रेलवे स्टेशन नरसिंहपुर में सीएम राइज एसडीएम कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र- छात्राओं एवं स्टाफ ने रेल यात्रियों से मतदान करने की अपील की।स्वीप गतिविधियों के अंतर्गत नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नरसिंहपुर ने अपने- अपने परिवारों को मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। एकीकृत शासकीय हाई स्कूल रीछई के शिक्षक- शिक्षिकाओं के द्वारा घर-घर जाकर एवं शादी समारोह में जाकर सभी मतदाताओं को मतदान हेतु जागरूक किया। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सुआतला, शासकीय हाईस्कूल सीरेगांव, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक शाला तेंदूखेड़ा, विकासखण्ड सांईखेड़ा की शासकीय नवीन माध्यमिक शाला रिछावर, शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल कठौतिया चीचली में घर- घर पीले चावल देकर मतदाताओं को मतदान करने के लिए 26 अप्रैल शुक्रवार को आमंत्रित किया।

मुख्यमंत्री अधोसंरचना की डेढ़ करोड़ की राशि पर सवाल

विपक्ष के भाजपा पार्षदों ने कहा पूरी योजना में बड़ा झोल
अधिकारियों सहित परिषद के भी कुछ जिम्मेदारों की भूमिका संदिग्ध

आमला। कहावत है अंधेर नगरी चौपट राजा इस कहावत में मात्र 11 शब्दों का अर्थ सागर जितनी गहराई समेटे हैं, इसके जितने मायने निकाले जाएं कम है, कुछ इसी तर्ज पर इन दिनों नगर पालिका में भी देखने को मिल रहा है, बीते कुछ समय में मुख्यमंत्री अधोसंरचना और कायाकल्प 2 के तहत शहर के लिए स्वीकृत करोड़ों रुपए के कार्यों की जो खुली धांधली और मनमानी सामने आ रही है उसे जिम्मेदारों पर सवाल उठ रहे हैं, लोगों का कहना है की करोड़ों के कार्यों की गुणवत्ता और धांधली की ऐसी तस्वीर शायद दूर-दूर तक देखने को ना मिले खुद नगर पालिका से जुड़े जनप्रतिनिधि और जानकार भी इस बात को अब खुले तौर पर स्वीकार करने लगे हैं कि बीते कुछ समय से नगर पालिका चलाने वाले जिम्मेदार बिना किसी भय के भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। नगर पालिका के जिम्मेदारों पर जो आरोप लगा रहे हैं, उनमें चुने हुए विपक्ष के पार्षद और मामले से जुड़े जानकार भी शामिल है जैसा कि बताया गया है कि बीते लगभग 5 वर्ष पूर्व सारणी की विकास इंटरप्राइजेस कंपनी को मुख्यमंत्री अधोसंरचना के तहत 1.47 करोड़ रुपए का ठेका शहर के अलग-अलग निर्माण कार्यों के लिए दिया गया था, अब जैसा की कंपनी पर आरोप है कि ठेकेदार द्वारा शुरू से ही कार्यों में गुणवत्ता से भारी समझौता किया गया, कार्यों को आधे अधूरे और अव्यवस्थित ढंग से ही छोड़ दिया गया था,फिलहाल मुख्यमंत्री अधोसंरचना का काम शुरू है,या किया गया हैं, इस योजना पर काम शुरू हुए, 5 वर्ष हो चुके हैं, जबकि नियमानुसार इस योजना को एक वर्ष में पूरा किया जाना था, और जैसा की जानकारी है कि ठेकेदार द्वारा आधे अधूरे और गैरजिम्मेदार ढंग से किए कार्यों के बाद भी योजना का लगभग 80त्न भुगतान ठेकेदार को किया जा चुका है, इस पूरी योजना में अधिकारियों द्वारा ठेकेदार पर की जा रही मेहरबानी को लेकर भी लोग सवाल उठा रहे हैं, कहा जा रहा है कि डेढ़ करोड़ की एक बड़ी राशि को इतनें अव्यवस्थित और गैर जिम्मेदार ढंग से क्यों खर्च किया गया, नगर पालिका में चुने हुए जनप्रतिनिधि भी इस बात को गंभीरता से उठा रहे हैं, परिषद में विपक्ष के ज्यादातर पार्षद शुरू से ही इस योजना में झोल को लेकर परिषद में प्रमुखता से अपनी बात उठाते आए हैं किंतु सत्ता पक्ष द्वारा इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा था, बताया गया है कि विपक्ष के पार्षद संबंधित ठेकेदार को ब्लैकलिस्टेड करने की बात भी कह चुके थे किंतु उसके बाद भी परिषद में सत्ता पक्ष और अधिकारियों की मिलीभगत से

ठेकेदार पर मेहरबानी की जा रही है, योजना की ज्यादातर राशि का भुगतान करने के बाद भी योजना से जुड़े काम अभी भी आधे अधूरे ही पड़े हैं।यहां लोगों के सवाल सिर्फ मुख्यमंत्री अधोसंरचना के ही नहीं है बल्कि कायाकल्प 2, और ऐसी तमाम खरीदी पर भी उठ रहे हैं, जहां पर अनियमितता साफ नजर आ रही है।

जिसे ब्लैक लिस्टेड करना था, उससे गलबइयाँ क्यों

दरअसल सारणी की विकास इंटरप्राइजेज कंपनी द्वारा मुख्यमंत्री अधोसंरचना के तहत ली गई डेढ़ करोड़ की ठेके की राशि को जिस अव्यवस्थित ढंग और लापरवाह तरीके से खर्च की जा रही है, उसको लेकर पिछले दिनों परिषद में विपक्ष द्वारा उक्त ठेकेदार को ब्लैकलिस्टेड करने की सिफारिश की गई थी,किंतु हैरानी इस बात की है कि परिषद में विपक्ष के पार्षदों द्वारा शासन की दुरुपयोग होती राशि पर सवाल उठाए थे, किंतु विपक्ष की अवहेलना कर उक्त ठेकेदार को राशि का भुगतान किया जाता रहा, और अब आनन फानन में आचार संहिता लगने के बाद शनिवार बाजार में ठेकेदार द्वारा पेटी पर दूसरे ठेकेदार से अवैध ढंग से काम कराया जा रहा है, यह आरोप भी शहर के जिम्मेदार पार्षदों ने ही लगाए हैं। जैसा कि बताया गया है कि योजना में इस कदर भारी लापरवाही की जा रही है, की पूरी योजना का प्रारूप ही बदल दिया गया है, और यें किसकी सहमति से हो रहा है, सवाल और संलिप्तता इसको लेकर भी है।

बार-बार रिवाइज और पेविंग की जगह कांक्रीट

मुख्यमंत्री अधोसंरचना के तहत लगभग डेढ़ करोड़ की राशि से जो निर्माण कार्य स्वीकृत किए गए हैं उसमें दर्जनों बदलाव और जिस काम के लिए राशि स्वीकृत की गई थी, उसकी जगह पर कोई और काम ही दर्शाया जा रहा हैं। मसलन पुलिया की जगह सड़क, पेविंग ब्लॉक की जगह कांक्रीट, यानी जहां जो होना था वहां वो हुआ ही नहीं उसकी जगह कुछ और हो गया। और मसला केवल मुख्यमंत्री अधोसंरचना के काम का ही नहीं है बल्कि कायाकल्प 2,के तहत कराए कार्य के अलावा भी कई तरह की अनावश्यक की गई खरीदियों का भी है, अब इन तमाम कारगुजारियों के पीछे कौन-कौन संलिप्त है, इसको लेकर विपक्ष के पार्षद सवाल उठा रहे हैं, इन लोगों का कहना है कि अभी तो आचार संहिता का दौर चल रहा है किंतु जैसे ही आचार संहिता खत्म होगी उसके बाद नगर पालिका में कुछ बड़ा देखने को मिल सकता है।

विपक्ष के पार्षदों ने कहा होगा हिसाब

मुख्यमंत्री अधोसंरचना का मामला हो या कायाकल्प 2 के तहत बंधा रोड स्थित लाखों की सड़क का मामला हो, सवाल जनप्रतिनिधियों के भी है और जनता के भी हैं,इस मौके पर विपक्ष के पार्षद संजय राठौर, राकेश शर्मा, सुधीर अंबाडकर, दीक्षा सुरजेकर,ममता धामोड़े, नीलम साहू, काशीबाई, खुशबू अतुलकर ने एक सुर में परिषद में हो रहे भ्रष्टाचार और मनमानी को लेकर सवाल खड़े किए हैं, इन पार्षदों का कहना है कि विकास इंटरप्राइजेज द्वारा मुख्यमंत्री अधोसंरचना के तहत डेढ़ करोड़ की राशि का हिसाब लिया जाएगा, और इसके लिए जिम्मेदारों की जिम्मेदारी भी तय की जाएगी जैसे ही आचार संहिता का दौर खत्म होगा मध्य प्रदेश शासन से पूरे मामले की जांच की अपील की जाएगी।

इनका कहना है

यह बात सच है कि मुख्यमंत्री अधोसंरचना का काम नियामनुसार नहीं हो रहा है किंतु मजबूरी है कि ठेकेदार का लगभग 80 फ़ीसदी भुगतान किया जा चुका है ऐसे में ठेकेदार खुद ही ब्लैक लिस्टेड होना चाह रहा है,किंतु जैसे तैसे मजबूरी में काम कराने की हमारी भी मजबूरी हैं।

- रोहित हारोड़े सभापति लोक निर्माण विभाग समिति नगर पालिका परिषद आमला

मैं अभी खुद ही कुछ कार्यों का निरीक्षण करके आया हूं कुछ काम में बदलाव किया गया है, काम की अवधि अधिक होने से कुछ परिवर्तन किए गए हैं वैसे भी मैं अभी नया आया हूं पहले के सीएमओ ही इस बारे में ज्यादा अच्छा जवाब दे पाएंगे।

- वीरेंद्र तिवारी मुख्य नगर पालिका अधिकारी आमला

प्रचार के अंतिम दिन वीडी शर्मा का रोड शो

पन्ना। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने चुनाव प्रचार के अंतिम दिन पन्ना में भगवान जुगल किशोर मंदिर में पूजन अर्चन कर रोड शो में शामिल होकर जनता का अभिवादन किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न समाज के पदाधिकारियों, व्यापारियों और आमजन से संवाद किया। वीडी शर्मा ने गांधी चौक में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि खजुराहो की जनता नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने को आतुर है। जनता के मूड को देखते हुए पहले कांग्रेस ने और फिर समाजवादी पार्टी ने मैदान छोड़ दिया। विपक्ष का कौन उम्मीदवार चुनाव लड़ रहा है, नजर ही नहीं आता। इस क्षेत्र में इंडी गठबंधन का कोई भी बड़ा नेता प्रचार के लिए नहीं आया। पूर्व में शर्मा ने प्राचीन किले में पूज्य संत बरम बाबा जी की समाधि का दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

चुनावी शोरगुल खत्म, सोशल मीडिया और घर पहुंच सेवाओं का दौर शुरू...

नर्मदापुरम। 17 वी लोकसभा चुनाव के शोरगुल नर्मदाचंल में पूरी तरह थम गये इसे यूं भी कहा जा सकता है कि एक प्रकार से कार्यकर्ता 38 से 40 डिग्री सेल्सियस में जो काम मन मारकर कर रहे थे चुनाव आयोग ने उसे पूरी तरह बंद करवा कर उनके मन की करवा दी, दो दिन अब प्रचार खंदक वाला दिखाई देगा। वोटरों को लुभाने के लिए उपयोगी सामग्रियां, घर पहुंच सेवाओं के कितने मामले प्रमुख दोनों दल सामने कितना ला पाते यह देखना है, अब सोशल मीडिया पर आई दो फोटो खासे चर्चा का विषय हैं। लोग कह रहे हैं यदि कमल इसी तरह पंजा का सहारा बना रहा तो वह दिन दूर नही कि धक्कम पलेट में कांग्रेस आगे निकल जाए ..? (वैसे भी क्षेत्र में यही कहा जा रहा है कि बड़े नेता बिल्कुल नहीं चाहते राजनीति की अब कोई नई दुकान खुल पाए) कांग्रेस के प्रचार का यह नायाब तरीका लोगों को बेहद भा रहा है वह भाजपा कांग्रेस के भीतर के हालात चित्रों की जरिए बयां हो रहे हैं। नर्मदापुरम लोकसभा क्षेत्र में तो ये कुछ ज्यादा ही चल रहे हैं। यह संकेत भाजपाइयों के बीच भितरघात की बातें भी चल निकली हैं। इन तस्वीरो से साफ हो रहा हालांकि अब तक कांग्रेस में ही भितरघाती होते थे। जो फूल छाप कांग्रेसी के नाम से जाने जाते थे। तो क्या इस बार हाथ की सफाई भाजपाई भी दिखाएंगे..? क्योंकि दूसरे चित्र में कमल में पंजा दिख रहा है। बहरहाल जो भी हो अटकलों और आशंकाओं के बादल इस चुनावी गर्मी के मौसम को खराब कर रहे हैं। यह वक्त बताएगा कि इन चित्रों का वास्तव में क्या परिणाम हुआ..?

समेरिटंस के विद्यार्थियों ने फिर सिद्ध की श्रेष्ठता
एमपी बोर्ड की 10वीं, 12वीं की परीक्षा में जिले में रहे अव्वल..

नर्मदापुरम। एमपी बोर्ड द्वारा मंगलवार को जारी हाईस्कूल और हायर सेकंडरी की परीक्षा के परिणामों में समेरिटंस के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपनी सिद्ध श्रेष्ठता को सिद्ध किया।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी समेरिटंस समूह के माता महाकाली परिसर जुमेराती के विद्यार्थियों ने सफलता का ध्वज लहरा दिया।

कक्षा 12 वीं की परीक्षा में स्कूल की छात्रा धनश्री गोहिया 95.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जिले में प्रथम रही। जबकि 10वीं की परीक्षा में इसी स्कूल की छात्रा अवनी गोहिया 96.8 प्रतिशत अंकों के साथ जिले में अव्वल रही। स्कूल का दोनों परीक्षाओं का परिणाम शत प्रतिशत रहा।

माखन नगर भी शत प्रतिशत

समूह के माखन नगर स्कूल का परीक्षा परिणाम भी शत प्रतिशत रहा। स्कूल का कक्षा 12वीं में गणित संकाय वैदेही वर्मा 95.2 प्रतिशत, बायोलॉजी संकाय में नैंसी चौहान 91.4 प्रतिशत और वाणिज्य संकाय में समृद्धि जैन 92.6 के साथ प्रथम रहे। परिणाम आने पर स्कूलों में विद्यार्थियों और अभिभावकों का तांता लग गया। बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों ने जमकर खुशियां मनाई। समूह के डायरेक्टर डा आशुतोष कुमार शर्मा जुमेराती स्कूल पहुंचे और बच्चों को शुभकामनाएं दी। प्राचार्य निधि दुबे, जागृति सिंह सहित समूह के सभी शिक्षकों ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नर्मदा आफिसर क्लब स्थित टेनिस मैदान खस्ता हाल में, सुधारने की मांग...

नर्मदापुरम। नर्मदा आफिसर क्लब स्थित टेनिस हार्ड कोर्ट ग्राउंड की हालत अत्यंत दयनीय स्थिति में है जो सभी तरफ से दरारें पड़ने से उखड़ गया है, इसके अलावा दूसरा पुराना क्ले कोर्ट अच्छी स्थिति में है जिसमें सिर्फ घास लगी है उसमें सफाई की आवश्यकता है जिससे उस पर टेनिस का अभ्यास किया जा सकता है। गौरतलब होगा नर्मदा आफिसर क्लब पुराने ब्रिटिश शासन काल 1919 की निर्मित भवन नगर में विरासत और धरोहर है जो ढहने लगी जीर्ण-शीर्ण जर्जर अवस्था में स्मृति चिन्ह के रूप में बची है। क्योंकि नर्मदा आफिसर क्लब की समिति लगभग पूरी तरह निष्क्रिय है क्लब के सचिव सुधीर विष्ट इसकी देखभाल करते रहे तब तक सबकुछ ठीक ठाक रहा लेकिन तीन वर्षों पूर्व उनका देहांत हो जाने क्लब की हालत दयनीय हो चुकी यहां तक सचिव का पद रिक्त है। ऐसे में पुरानी को सुरक्षित रखने का दायित्व बढ़ जाता है। इसे लेकर क्यों नहीं नर्मदा आफिसर क्लब की नवीन कार्यकारणी का गठन कर लिया जाना चाहिए जिसमें

नई समिति गठन करने में खिलाड़ी, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक प्रतिनिधि, पत्रकार, सेवानिवृत्त अधिकारी/ कर्मचारी, प्रशासकीय अधिकारीयों को होना चाहिए, जिससे मुख्यालय पर जनभागीदारी समिति बना कर जनसहयोग से विधायक/ सासंद/ राज्यसभा सासंद निधि से खेल प्रशाल विकसित किया जा सकता है। नगरपालिका, लोक निर्माण विभाग, खेल युवक कल्याण विभाग, सामाजिक न्याय विभाग, पुलिस विभाग, शिक्षा विभाग, बाल विकास विभाग के आंशिक सहयोग से भी इस हैरीटेज धरोहर को बचाया जा सकता है। गौर करने लायक बात यह है कि नर्मदा आफिसर क्लब के टेनिस मैदान पर अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी आध्या तिवारी प्रेक्टिस करती है जिन्हें काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है मैदान सुधारने को लेकर उन्होंने गुहार लगाई है।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

दूसरे दौर के चुनाव में तल्खी भरे मुद्दों की वजह क्या ?

पहले दौर के मतदान प्रतिशत में आई कमी के बाद भारतीय जनता पार्टी ने नए सिरे से अपने प्रचार की रणनीति बनाई है। वोटर को घर से मतदान केंद्र तक ले जाने का प्लान बनाया गया है। मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता यह महसूस करते हैं कि बड़े पैमाने पर कांग्रेस से नेताओं के दल बदल से पार्टी का समर्पित कार्यकर्ता हतोत्साहित हुआ है। इसी तरह की हताशा विधानसभा चुनाव के पहले भी देखी गई थी। तब कार्यकर्ता को भरोसा दिलाया गया था कि उनका हक नहीं मारा जाएगा? लेकिन सीधी से लेकर दमोह तक टिकट ऐसे लोगों को मिले जिनकी पृष्ठभूमि मूल रूप से भाजपा की नहीं है। सतना के उम्मीदवार गणेश सिंह भी इनमें से एक हैं। गणेश सिंह जब से भाजपा में आए हैं किसी और कार्यकर्ता को सतना में लोकसभा चुनाव लडऩे का मौका नहीं मिला। उदयप्रताप सिंह गाडरवारा से विधानसभा चुनाव नहीं जीतते तो वे ही होशंगाबाद से फिर लोकसभा उम्मीदवार होते, यह भी कार्यकर्ता समझ रहा है। उदयप्रताप सिंह भी कांग्रेस से ही भाजपा में आए हैं। कार्यकर्ता के दिमाग में यह बात भी बैठ गई है कि पार्टी पर कुछ नेताओं का कब्जा हो गया है। टिकट भी इन नेताओं की पसंद ना पसंद के आधार पर तय हो रहे हैं। उदाहण के तौर पर ग्वालियर-चंबल संभाग की तीन लोकसभा सीट का जिक्र कार्यकर्ता कर रहा है। मुरैन, भिंड और ग्वालियर। तीनों स्थान पर विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर के करीबियों को टिकट दिया गया। भोपाल-होशंगाबाद संभाग के सारे टिकट शिवराज सिंह चौहान के करीबियों को मिले हैं। छिंदवाड़ा का कार्यकर्ता भी बंटी साहू की उम्मीदवारी से नाराज था। इसी कारण अमित शाह को वहां रात्रि विश्राम कर नेताओं को चेतावनी देनी पड़ी थी। सीधी में सबसे कम मतदान हुआ है। यहां पार्टी के भीतर कई गुट सक्रिय हैं। इसका असर हार-जीत के अंतर पर पड़ना है। जिसके चलते कार्यकर्ता अपना भविष्य देख रहा है। भाजपा दूसरे चरण में कम मतदान के खतरे को कम करने के लिए चुनाव प्रचार को तीखा करती जा रही है। ताकि वोटर के भीतर उदासीनता का भाव खत्म हो। अभी हर लोकसभा क्षेत्र में स्थिति यह है कि वोटर चुनाव के मुददों पर रुचि ही प्रदर्शित नहीं कर रहा है। कारण, आएगा तो मोदी ही का नारा है। भाजपा चुनाव पूरी तरह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे पर लड़ रही है। कांग्रेस नीत इंडिया गठबंधन की सियासत बिखरी हुई है। वह प्रचार में भी कमजोर दिखाई दे रही है। मजबूती से चुनाव लड़ रही भारतीय जनता पार्टी में कम मतदान प्रतिशत के बाद इंडिया शाइनिंग के नारे पर भाजपा नीत गठबंधन वर्ष 2004 का लोकसभा चुनाव लड़ा था। उस वक्त प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी थे। चुनाव में कांग्रेस ने लगभग आठ वर्ष बाद सत्ता में वापसी की थी। कांग्रेस नीत यूपीए गठबंधन दस साल सरकार में रहा। इस गठबंधन के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह थे। इन्हीं डॉ. मनमोहन सिंह के हवाले से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दो दिन पहले कांग्रेस पर बड़ा हमला बोला था। उन्होंने डॉ. मनमोहन सिंह का नाम लिये बगैर कहा कि पहले जब इनकी सरकार थी, तब उन्होंने कहा था कि देश की संपत्ति का पहला अधिकार मुसलमानों का है। इसका मतलब ये संपत्ति इकटठा कर किसको बांटेंगे, जिनके ज्यादा बच्चे हैं, उनको बांटेंगे, घुसपैठियों को बांटेंगे। इससे पहले प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में संपत्ति का सर्वे करने की बात कही है। इसका मतलब सोना कितना है इसकी जांच की जाएगी, चांदी का हिसाब लगाया जाएगा। उन्होंने मंगल सूत्र का जिक्र करते हुए कहा कि कांग्रेस गठबंधन उसे छीनने की बात कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस बयान पर कांग्रेस का आक्रमण होना स्वाभाविक था। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अपना घोषणा पत्र पढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री से समय भी मांग लिया। विपक्षी गठबंधन ने इस मामले की शिकायत चुनाव आयोग से भी की है। चुनाव आयोग की अब तक कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। लेकिन, अचानक चुनाव में गर्मी जरूर आ गई है।

भवानी पर सख्ती, राम पर उदार

चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर भी कई साल खड़े हो रहे हैं। खासतौर पर धर्म के इस्तेमाल पर चुनाव में किसी धर्म के विशेष के देवी-देवताओं का का जिक्र कर वोट मांगना अपराध की श्रेणी में आता है। चुनाव आयोग द्वारा शिवसेना उद्धव गुट को दिए नोटिस से भी यही जाहिर होता है कि देवी देवता के नाम का उपयोग नहीं किया जा सकता। आयोग ने रविवार को शिवसेना (उद्धव गुट) को नोटिस भेजकर कैंपेन सॉग से 'भवानी' शब्द हटाने को कहा है। आयोग ने कहा कि यह शब्द हिंदू देवी से जुड़ा हुआ शब्द है। इलेक्शन में इस तरह के धार्मिक नारे का इस्तेमाल नहीं कर सकते। आयोग के नोटिस पर उद्धव ठाकरे ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि वे अपने थीम सॉन्ग से भवानी शब्द नहीं हटाएंगे। आयोग को जो कार्रवाई करनी है करे। उद्धव ने आगे कहा कि बीजेपी नेता कई बार धर्म के नाम पर वोट मांग चुके हैं, लेकिन उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई? कर्नाटक के चुनावी मंच से प्रधानमंत्री द्वारा बजरंग बली के नाम पर वोट मांगने के मामले में भी ठाकरे ने चुनाव आयोग को शिकायत की थी। लेकिन, आयोग ने इस शिकायत का कोई जवाब उन्हें नहीं भेजा। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके रणनीतिकारों की कोशिश है कि हिंदी भाषी राज्यों में किसी भी तरह वोटों का धर्म के आधार पर ध्रुवीकरण हो जाए। इस बार पार्टी दक्षिण के राज्यों खासकर केरल में भी अपनी कुछ संभावनाएं दे रखी है। बांसवाड़ा में भी मंगलसूत्र छिनने और अल्पसंख्यकों को देने का जिक्र भी इसी उद्देश्य से किया गया था।

दूरदर्शन के लोगों में बदलाव

लोकसभा चुनाव के बीच दूरदर्शन द्वारा अपने लोगों में किए बदलाव से भी विवाद की स्थिति भी निर्मित हुई है। दूरदर्शन का लोगो भगवा रंग का हो गया है। जाहिर है कि इस पर विवाद होना था। इस बदलाव को भी ध्रुवीकरण की राजनीति से ही जोडक़र देखा जा रहा है। दूरदर्शन के भगवाकरण पर तृणमूल कांग्रेस की प्रतिक्रिया तीखी आई। राज्यसभा सांसद जवाहर सरकार, जो 2012 और 2014 के बीच प्रसार भारती के सीईओ थे ने कहा, नेशनल ब्रॉडकास्ट ने अपने ऐतिहासिक फ्लैगशिप लोगो को भगवा रंग में रंग दिया है। इसके पूर्व सीईओ के रूप में मैं इसके भगवाकरण को चिंता के साथ देख रहा हूं और महसूस कर रहा हूं - यह अब प्रसार भारती नहीं है, यह प्रचार (प्रचार) भारती है। इसके बाद भाजपा नेताओं के एक के बाद एक कई बयान आए। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को यदि भगवा से आपत्ति है तो अपने झंडे से भगवा हटा दे।

उज्जैन के मुकाबले पर सभी की नजर

उज्जैन लोकसभा की सीट अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित सीट है। इस सीट पर भाजपा के मौजूदा सांसद अनिल फिरोजिया चुनाव लड़ रहे हैं। कांग्रेस ने उनके मुकाबले में तराना के विधायक महेश परमार को मैदान में उतारा है। फिरोजिया और परमार 2018 के विधानसभा चुनाव में आमने-सामने थे। फिरोजिया चुनाव हार गए थे। चुनाव हारने के बाद फिरोजिया को पार्टी ने लोकसभा की टिकट दी और वे चुनाव जीत कर सांसद बन गए। इसी तरह का प्रयोग इस बार भोपाल और ग्वालियर लोकसभा सीट पर भी हुआ है। भोपाल उत्तर से विधानसभा का चुनाव हारने के बाद आलोक शर्मा और ग्वालियर ग्रामीण से विधानसभा का चुनाव हारने वाले भारत सिंह कुशवाहा को लोकसभा का टिकट दिया गया है। उज्जैन लोकसभा की सीट पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है। मुख्यमंत्री ने सोमवार को फिरोजिया का नामांकन दाखिल कराया। उज्जैन वाले मोहन यादव की भाषा शैली और उसका भाव खूब समझते हैं। मालवा में किसी को भी उनका भाव समझने में दिक्कत नहीं होती । भाषण और स्वागत के दौरान लोगों को तालियां बजाने के लिए प्रेरित करना मुख्यमंत्री की आदत का हिस्सा है। लेकिन, बुंदेलखंड और बघेलखंड में कई बार मालवी भाषा उन्हें वोटर से नहीं जोड़ पाती है। शिवराज सिंह चौहान का भाषण ठेट देहाती शैली में होता है। इस कारण वोटर से उनका सीधा संवाद भी आसानी से बन जाता है। शिवराज सिंह चौहान ने जिस खूबसूरती से महाकाल की मूर्तियों के हवा में उड़ जाने के मुद्दे को कमजोर किया था, उससे चुनाव में वह नुकसान से बच गए थे। उज्जैन लोकसभा क्षेत्र की आठ विधानसभा सीटों में से छह पर भाजपा विधायक हैं। मुख्यमंत्री उज्जैन का होने से भी लाभ भाजपा को ही मिलना है।

क्षिप्रा की गंदगी कितना बड़ा मुद्दा?

कमलनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद शनिचरी अमावस्या के दिन क्षिप्रा में गंदगी होने से बवाल मच गया था। कमलनाथ ने मनीष सिंह को कलेक्टर पद से हटाकर मंत्रालय में पदस्थ कर दिया था। कांग्रेस के लोकसभा उम्मीदवार महेश परमार क्षिप्रा को चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं। उज्जैन में वोट तेरह मई को डाले जाएंगे। तब तक सरकार क्षिप्रा की सफाई का कोई प्लान शायद ले आएं। इससे पहले कांग्रेस उम्मीदवार महेश परमार ने क्षिप्रा में छलांग दी है। महेश परमार मंगलवार सुबह शिप्रा के घाट पहुंचे। उन्होंने नदी में मिल रहे गंदे पानी के बीच डुबकी लगाकर और आचमन कर विरोध दर्ज कराया। विधायक ने कहा, पिछले 20 साल से मध्य प्रदेश में और 10 साल से देश में भाजपा की सरकार है। लगातार सालों से इनके सांसद, विधायक और महापौर हैं। भाजपा और शासन प्रशासन के लोग हमें कलंकित कर रहे हैं। 1500 करोड़ खर्च करने के बाद भी ये स्थिति है फिर से 600 करोड़ का नया बजट आया है। हमारे भाजपा के सांसद पिछले 5 साल में यहां एक बार भी नहीं आए हैं। धर्म के नाम पर राजनीति करने वाले लोग कहां हैं? 40-50 लाख इंदौरवासियों का मल मूत्र रोज इसमें मिलता है।

अरुण यादव ने पचौरी को लेकर किया खुलासा

सुरेश पचौरी कांग्रेस में बड़े नेता के रूप स्थापित थे। उन्होंने भी दलबदल कर लिया। उनका दल बदल वैसा ही चौंकाने वाला था जैसा ज्योतिरादित्य सिंधिया का था। सिंधिया के साथ 21 विधायक भी भाजपा में गए थे। सुरेश पचौरी भी धीरे-धीरे अपने समर्थकों के लिए भाजपा में जगह बना रहे हैं। उनके जाने से कांग्रेस के मौजूदा नेता खुश हैं। इनमें पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव भी हैं। अरुण यादव ने होशंगाबाद में पचौरी को लेकर कई खुलासे किए हैं। इटारसी कस्बे में हुई जनसभा में पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने ने कहा जो नेताजी यहां के थे वह कहते थे इसको टिकट मत देना। इसको देना, इसको नहीं देना। उनका नाम टिकट कटाऊ नेताजी हो गया था। कोई भी अच्छा हो, मजबूत लीडर हो, उसको टिकट नहीं मिलना चाहिए। यह उनका क्राइटेरिया होता था, लेकिन हमने टिकट कटाऊ नेताओं की एक ना सुनी और जब नगरीय निकाय का चुनाव हुआ तब प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने सारे नौजवानों को टिकट देने का काम किया। अरुण यादव ने कहा- मुझे याद है जब मैं 2013 में अध्यक्ष बना तो मुझे होशंगाबाद आने में बड़ा डर लगता था। यहां के नेताओं को थोड़ा बहुत पता होगा। डर क्यों लगता था ? यह आप समझ जाइए। डर इसलिए लगता था, क्योंकि यहां पर एक ऐसे नेता हमारे हुए। यहां ऐसा होता था यहां अगर आना है तो परमिशन लेनी पड़ती थी कि मैं प्रदेश का अध्यक्ष हूं अगर आपकी इजाजत हो तो मैं यहां पर शादी में हो आऊं। या किसी के यहां माताजी खत्म हो गई, तो मुझे जाना है। यहां आने के लिए परमिशन लेनी पड़ती थी। अरुण यादव ने कहा- हिंदुस्तान के इतिहास में और कांग्रेस के इतिहास में एक नेता ऐसा हुआ जो 30 साल तक बिना चुनाव लड़े राज्यसभा का सदस्य रहा। मंत्री रहा। तमाम कांग्रेस पार्टी के ओहदों पर रहे। जो कोई भी चुनाव नहीं लड़ा और अगर लड़ा एक बार 27 हजार से, एक बार 32 हजार से हारे।

साध्वी प्रज्ञा के आश्रम की जमीन पर विवाद

साध्वी प्रज्ञा को भाजपा ने दुबारा लोकसभा में जाने का मौका नहीं दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नाराज थे। इस कारण टिकट नहीं मिला। आलोक शर्मा की लॉटरी खुल गई। आलोक शर्मा के प्रचार में साध्वी प्रज्ञा दिखाई नहीं दे रहीं। भोपाल से ही सांसद रहीं उमा भारती उत्तराखंड की यात्रा पर चली गई हैं। टिकट न मिलने के बाद प्रज्ञा सिंह भी आश्रम बनाने की तैयारी कर रही हैं। मंगलवार को आश्रम की जमीन को लेकर जमकर हंगामा हुआ। मामला नयापुरा का है जा बताया जाता है कि प्रज्ञा सिंह ने नेवरी के पास नयापुरा में आश्रम बनाने के लिए जमीन ली है। वे सोमवार को रात करीब 9 बजे कुछ लोगों के साथ जमीन पर कब्जा लेने के लिए पहुंचीं। गांव वालों के अनुसार उनके साथ एक जेसीबी भी थी। साध्वी ने मौके पर खड़े रहकर जमीन पर कब्जा लिया और इसके लिए गांव के पुराने श्मशान घाट की बाउंड्री वॉल तोड़ दी। मामला राजस्व से जुड़ा हुआ है। इसलिए पुलिस ने बगैर एफआईआर दर्ज किए मामला राजस्व विभाग को भेज दिया है।

अनुष्का अग्रवाल म.प्र.10वीं बोर्ड टॉपर

500 में से 495 अंक, मैथ्स-साइंस सब्जेक्ट में 100 में से 100 अंक मिले

भोपाल (नप्र)। माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश ने 10वीं बोर्ड का रिजल्ट जारी कर दिया है। मंडला के नैनपुर की रहने वाले अनुष्का अग्रवाल ने प्रदेश में टॉप किया है। उन्हें 500 में से 495 अंक मिले हैं। मैथ्स और साइंस सब्जेक्ट में अनुष्का ने 100 में से 100 अंक हासिल किए हैं।

9.65 लाख स्टूडेंट्स ने दी थी परीक्षा

इस साल 9.65 लाख स्टूडेंट्स ने दी परीक्षा थी।इस परीक्षा के लिए प्रदेशभर में कुल 3,868 एग्जाम सेंटर बनाए गए थे। 2024 में 9 लाख 65 हजार हजार छात्रों परीक्षा दी है। इस परीक्षा के लिए प्रदेशभर में कुल 3,868 एग्जाम सेंटर बनाए गए थे।

10वीं में भी छात्राएं हमेशा अव्वल

12वीं की तरह 10वीं में भी पिछले 5 सालों में छात्राओं ने छात्रों से बेहतर परफॉर्म किया है। माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड के अनुसार साल 2019 में लड़के जहां 59.15 प्रतिशत पास हुए तो लड़कियों की यही संख्या 61.32 रही। वहीं, हमेशा की तरह साल 2023 में छात्राओं का पासिंग प्रतिशत 66 से अधिक रहा। जबकि छात्र 2023 में 60 प्रतिशत से अधिक पास हुए। इस साल कुल रिजल्ट 63.29 रहा था।

शाजापुर के जयंत यादव एमपी 12वीं बोर्ड टॉपर

रीवा की अंशिका मिश्रा, विदिशा की मुस्कान दांगी टॉपर, मेरिट में भोपाल के 13, इंदौर का एक स्टूडेंट

माध्यमिक शिक्षा मंडल ने 12वीं बोर्ड परीक्षा के नतीजे घोषित कर दिए हैं। इस साल 64.49 प्रतिशत नियमित और 22.46 प्रतिशत प्राइवेट स्टूडेंट पास हुए हैं। शाजापुर के जयंत यादव एमपी 12वीं बोर्ड टॉपर रहे हैं। उन्होंने 500 में से 487 अंक हासिल किए हैं। जयंत सहारा पब्लिक स्कूल के छात्र हैं। वाणिज्य समूह में विदिशा की मुस्कान डांगी अव्वल रही हैं। उन्होंने 500 में से 493 अंक हासिल किए हैं। वे सरस्वती शिशु मंदिर की छात्रा हैं। मैथ्स-साइंस ग्रुप में रीवा की अंशिका मिश्रा 493 अंक हासिल कर टॉपर रही हैं। वे इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल की छात्रा हैं।स्कूल शिक्षा विभाग की प्रमुख सचिव रश्मि अरुण शमी ने परिणाम जारी किया। वाणिज्य समूह में विदिशा की मुस्कान डांगी अव्वल रही हैं। उन्होंने 500 में से 493 अंक हासिल किए हैं। वे सरस्वती शिशु मंदिर की छात्रा हैं। प्रदेश में बोर्ड परीक्षाओं के लिए कुल 7,501 परीक्षा केंद्रों पर 8 लाख 57 हजार स्टूडेंट्स ने परीक्षा दी थी।

हरदा की युवती को धोखे से उज्जैन लाकर रेप

4 युवतियों समेत 8 गिरफ्तार ; इंदौर में रहकर चला रहे थे सेक्स रैकेट

उज्जैन (नप्र)। हरदा की युवती को धोखे से उज्जैन लाकर रेप करने का मामला सामने आया है। 8 आरोपियों ने युवती को महाकाल रेस्ट हाउस भेजा। यहां इनमें से एक युवक ने उसके साथ रेप और मारपीट की। पुलिस ने आरोपी 4 युवक और 4 युवतियों को गिरफ्तार किया है।

आरोपी युवतियां उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड और दिल्ली की रहने वाली हैं। पुलिस के मुताबिक, सभी आरोपी इंदौर में रहकर सेक्स रैकेट चला रहे थे।पीड़ित बुधवार को नागझिरी थाने पहुंची। उसने बताया कि आरोपी उसके जान-पहचान वाले हैं। उसे काम दिलाने का कहकर उज्जैन लाए थे। उन्होंने जबरदस्ती उसे देह व्यापार में धकेलना चाहा। विरोध करने पर मारपीट की। एसपी प्रदीप शर्मा ने बताया कि गिरोह के गौरव भारती निवासी इंदौर, अमन पवार निवासी उज्जैन, रेप के आरोपी उज्जैन निवासी गोविंद पालीवाल समेत 8 को अरेस्ट किया है। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पेड़ से टकराई कार, 7 माह के बच्चे की मौत

ओंकारेश्वर दर्शन कर लौट रहे थे महाराष्ट्र के श्रद्धालु ; 6 लोग गंभीर घायल

खंडवा (नप्र)। खंडवा के ओंकारेश्वर रोड पर बुधवार दोपहर एक दर्दनाक हादसा हो गया। तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। हादसे में 7 माह के मासूम बच्चे की मौके पर ही मौत हो गई। 6 लोग गंभीर रूप से घायल है। कार सवार सभी लोग महाराष्ट्र से है। वे ओंकारेश्वर दर्शन करने आए थे। दर्शन कर वापस महाराष्ट्र लौट रहे थे। घायलों को सनावद सिविल अस्पताल से इंदौर रेफर किया है।

हादसा, दोपहर 12 बजे के करीब ओंकारेश्वर रोड पर मोरटक्का और थापना गांव के बीच हुआ। सूचना मिलते ही मोरटक्का चौकी पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को 108 एंबुलेंस की मदद से सनावद सिविल अस्पताल ले गए। हादसे में 7 लोग गंभीर रूप से घायल हुए है। 7 माह के कुणाल को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पेड़ से टकराई कार चकनाचूर हो चुकी है। घायलों को सनावद से इंदौर रेफर किया गया है।

मोरटक्का चौकी प्रभारी शिवराम जाट के मुताबिक, घायलों में गणेश (35) और उसका परिवार है। बेटा विष्णु (15), पत्नी बीना (35), बेटी स्नेहा (2) और खुशी (5) सहित रामसिंह (55) है। इन्हें गंभीर रूप से चोंटे आई है। प्रारंभिक जानकारी में हादसे की वजह कार का अनियंत्रित होना सामने आया है।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार दो युवकों की मौत

टीकमगढ़ (नप्र)। जिले के बल्देवगढ़ थाना क्षेत्र के कैलपुरा गांव के पास ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। घटना में बाइक सवार दोनों लोगों की मौत हो गई। बुधवार को बल्देवगढ़ स्वास्थ्य केंद्र में दोनों मृतकों के शवों का पोस्टमॉर्ट्म कर परिजनों को सौंपे गए। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है।

बल्देवगढ़ पुलिस ने बताया कि मंगलवार देर रात कैलपुरा गांव के पास ट्रक ने बाइक सवार दो लोगों को टक्कर मार दी। कुडीला थाना क्षेत्र के पथराई गांव निवासी 32 वर्षीय परशुराम पिता मोहन लोधी और 22 वर्षीय तुलाराम पिता हरिराम लोधी बाइक से अपनी रिश्तेदारी में बल्देवगढ़ जा रहे थे। इसी दौरान देर रात कैलपुरा गांव के पास ट्रक ने बाइक सवार दोनों लोगों को टक्कर मार दी।

स्थानीय लोगों ने पुलिस को घटना की सूचना दी। इसके बाद जानकारी लगते ही पुलिस मौके पर पहुंची और 108 एम्बुलेंस की मदद से दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बल्देवगढ़ लाया गया। जहां परीक्षण के बाद डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

पुलिस ने बताया कि तत्काल घटना की सूचना मृतकों के परिजनों को दी गई। आज सामुदायिक केंद्र में दोनों शवों का पीएम कराया गया। इसके बाद शव परिजनों को सौंप दिए गए है।

महाकाल के गर्भगृह में 11 कलशों की गलंतिका बांधी

हर कलश पर नदी का नाम ; वैशाख से ज्येष्ठ तक सतत जलधारा प्रवाहित की जाएगी

उज्जैन (नप्र)। महाकाल मंदिर के गर्भगृह में मंगलवार को वैशाख कृष्ण प्रतिपदा पर 11 मिट्टी के कलशों की गलंतिका बांधी गई। कलशों पर नदियों के नाम गंगा, सिंधु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, सरयु, शिप्रा, गंडकी, बेतवा अंकित किए गए हैं।

वैशाख और ज्येष्ठ माह में गर्मी चरम पर होती है। ऐसे में गलंतिका के माध्यम से 22 जून (ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा) तक श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग पर सतत शीतल जलधारा प्रवाहित की जाएगी। दो महीने (24 अप्रैल से 22 जून तक) प्रतिदिन भस्म आरती के बाद सुबह 6 बजे से संध्या कालीन पूजन (शाम 5 बजे) तक गलंतिका बंधी रहेगी।

मान्यता : शीतलता के लिए बांधी जाती है गलंतिका

पं. महेश पुजारी के अनुसार, समुद्र मंथन के समय भगवान शिव ने गरल (विष) पान किया था। गरल अग्नि शमन करने के लिए ही आदिदेव सदाशिव का जलाभिषेक किया जाता है। गर्मी के दिनों में विष की उष्णता (गर्मी) और भी बढ़ जाती है, इसलिए वैशाखऔर ज्येष्ठ मास में भगवान को शीतलता प्रदान करने के लिए मिट्टी के कलश से ठंडे पानी की जलधारा प्रवाहित की जाती है। इसको पलंतिका कहते हैं।

भगवान महाकाल का जल से अभिषेक कर दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, फलों के रस से बने पंचामृत से अभिषेक - पूजन किया गया। रजत के आभूषणों, भांग, चंदन, सूखे मेवे से गणेश रूपी दिव्य श्रृंगार किया गया। मस्तक पर त्रिपुंड, शेषनाग का रजत मुकुट धारण कर रजत की मुंडमाल और रुद्राक्ष की माला अर्पित की गई। सुगंधित पुष्प से बनी माला धारण की। नवीन वस्त्र अर्पित कर फल और मिष्ठान का भोग लगाया गया। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया।